SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा अर्चना

अंक - 19

अवधिः जनवरी-2023 से जून-2023

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-I)

राजस्थान, जयपुर

महालेखाकार कार्यालय परिसर में स्थित चारों कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह - 2023 के दृश्य

“लेखापरीक्षा अर्चना” परिवार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-।) राजस्थान, जयपुर

की हिन्दी अर्द्धवार्षिक पत्रिका

संरक्षक

के. सुब्रमण्यम

प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-।) राजस्थान, जयपुर

परामर्शदात्री

श्रीमती मीना कुमारी मीणा

वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन

संपादक मण्डल

प्रबन्ध सम्पादक

श्री अरूण कुमार शर्मा

कल्याण अधिकारी

संपादक

श्री वीरेन्द्र सिंह

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सहायक संपादक

सुश्री रश्मि राज

कनिष्ठ अनुवादक

श्री जगदीश प्रसाद

लेखापरीक्षक

https://cag.gov.in/ag1/rajasthan/hi

मूल्यः- राजभाषा के प्रति निष्ठा

आवरण पृष्ठः कालबेलिया लोक नृत्य के द्वारा राजस्थान की संस्कृति को दर्शाया गया है।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” के 19वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी केवल अनुवाद की भाषा नहीं है, यह जनमानस के हृदय की भाषा है इसलिए मूल कार्य हिंदी में ही हो, इसका प्रयास करना चाहिए।

पठन-पाठन व्यक्तित्व विकास में तो सहायक है ही साथ ही यह किसी संस्थान की छवि के निर्माण में भी अपना विशेष महत्व रखता है। इसके लिए स्तरीय एवं ज्ञान से भरपूर सामग्री से युक्त पत्र पत्रिकाओं का विशेष महत्व होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है है कि हमारी पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा निखारने के साथ साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में भी सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल, सभी रचनाकारों एवं पाठकों को बधाई देते हुए मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल साहित्यिक भविष्य एवं उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

पत्रिका की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

(के. सुब्रमण्यम)

प्रधान महालेखाकार

संपादकीय

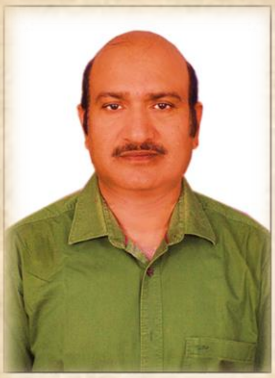

हमारी विभागीय पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” का नवीन 19वां अंक भी सुधि पाठकों को पूर्व अंकों की भाँति यथासमय प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। यह सम्पादकीय परिवार के सुप्रयासों के अतिरिक्त रचनाकारों के बहुमूल्य योगदान, कार्यालय कर्मियों के राजभाषा हिंदी के प्रति बढ़ते रुझान एवं पाठकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया के कारण संभव हो पाया है।

राजकीय कार्यालय के कार्मिक होने के नाते हमारा यह संवैधानिक दायित्व है कि हाम अपनी राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य कर अपने कार्यालय में राजभाषा की स्थिति को सुदृढ़ बनाए रखें। यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि हमारे कार्यालय में भारत सरकार द्वारा निर्धारित राजभाषा संबंधी सभी प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चत किया जा रहा है।

प्रस्तुत अंक में हमारे कार्यालय में गत छः माह में होने वाली गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की झलकियों के साथ - साथ कार्मिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर रचित लेखों, कहानियों एवं कविताओं इत्यादि का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं इस पत्रिका में योगदान देने वाले सेवारत एवं सेवानिवृत्त कार्यालय कर्मियों तथा अतिथि रचनाकारों का आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग से पत्रिका इस स्तर तक पहुँच पायी है।

आशा है कि पाठकों को पत्रिका रूचिकर लगेगी एवं पूर्व की भाँति पाठकों का स्नेह ‘लेखापरीक्षा अर्चना’ को मिलता रहेगा। सम्पादकीय परिवार के प्रयास कितने सफल हैं, इसका निर्णय तो पाठकगण ही करेंगे। ‘लेखापरीक्षा अर्चना’ की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए पाठकों के बहुमूल्य सुझावों का स्वागत है।

वीरेन्द्र सिंह

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	आइए अपनी सेवा पुस्तिका को समझे	लेख	श्री राजीव भाटिया	07
2.	भाई	कविता	श्री पंच रतन हर्ष	13
3.	जीवन के प्रति तीन दृष्टिकोण	कहानी	श्री रामनारायण	14
4.	भगवद्‌गीता और विज्ञान	लेख	डॉ रानी दाधीच	16
5.	गजल	गजल	श्री रामानंद शर्मा	19
6.	रामायण काल में नारी	लेख	डॉ नवल किशोर सेठी	20
7.	आधुनिक दुनिया का ब्रहमास्त्र - एआई	लेख	श्री दीपक कुमार	24
8.	संतोष	कहानी	सुश्री रीतिका मोहन	28
9.	जिज्ञासा	कविता	श्री ओम प्रकाश गुप्ता	30
10.	सूरज दादा	कविता	श्री ओम प्रकाश गुप्ता	30
11.	आलोचना नहीं, समालोचना करें	लेख	श्री राव जितेन्द्र प्रसाद	31
12.	दिव्यांगता एक वरदान है, दिव्यागंता में ही जहान है	लेख	श्रीमती सुमन शर्मा	32
13.	गजल	गजल	श्री रामानन्द शर्मा	38
14.	बनारस यात्रा वृतांत	लेख	सुश्री नेहा शर्मा	39
15.	आधुनिक बहू	कहानी	सुश्री रश्मि राज	41
16.	व्यथा	कविता	सुश्री रूचि गुप्ता	43
17.	बेटी	कहानी	सुश्री प्रीति शर्मा	44
18.	अन्न का सम्मान एवं सदुपयोग ही भोजन विवेक है	लेख	श्री पदम चन्द गाँधी	54
19.	रैदास, एक प्रेमी भक्त	लेख	सुश्री उमा शर्मा	60
20.	क्या खोया क्या पाया	कहानी	सुश्री शालिनी दायमा	62
21.	समय की पाबंदी	लेख	श्री देव शर्मा	67
22.	कार्यालयीन गतिविधियां	प्रतिवेदन	श्री अरूण कुमार शर्मा	69
23.	पाठकों के अभिमत	प्रतिक्रिया	पाठकवृंद	71
23	लेखापरीक्षा शब्दावली	शब्दावली	राजभाषा अनुभाग	74
23.	हम भारत के वरिष्ठ नौजवान	कविता	श्री मदन लाल कोली	75

स्वत्व-त्याग (डिस्क्लेमर)- इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार है। इसमें निहित लेख, कविताएँ तथा विचार इत्यादि मूलतः लेखकों के अपने हैं और यह आवश्यक नहीं है कि कार्यालय इनसे सहमत हो।

आइए अपनी सेवा पुस्तिका को समझें

सेवा पुस्तिका का अर्थ है निर्धारित प्रपत्रों का एक एकल बंधन, जिसमें एक सरकारी कर्मचारी के सेवा रिकॉर्ड को उसके सेवा अवधि के दौरान हुई सभी आधिकारिक घटनाओं की प्रविष्टियों के रूप में रखा जाता है। एक सरकारी कर्मचारी की सेवा पुस्तिका उसकी पूरी सेवा अवधि में सभी घटनाओं को रिकॉर्ड करने के लिए एक दस्तावेज है और सेवा के इतिहास को दर्शाने के लिए उसकी भर्ती के चरण से लेकर उसकी सेवानिवृत्ति तक प्रत्येक प्रशासनिक कार्रवाई को दर्शाती है।

सेवा पुस्तिका प्रत्येक कार्मिक का एक महत्वपूर्ण अभिलेख है जिसमें कार्मिक का व्यक्तिगत विवरण, योग्यता, वेतन, सेवा सत्यापन, समय समय पर नियुक्ति, पदस्थापन, पदोन्नति, एसीपी, ट्रांसफ़र पर कार्यग्रहण/कार्यमुक्ति, सीसीए रूल्स के अनुसार विभागीय कार्यवाही, जाँच, निलंबन, दंड, बर्खास्त आदि की प्रविष्टि के साथ ही विभिन्न प्रकार के अवकाश जैसे उपार्जित अवकाश, परिवर्तित अवकाश/प्रसूति अवकाश/पितृत्व अवकाश/समर्पित अवकाश/शिशु पालना अवकाश/अध्ययन अवकाश एवं अन्य मिलने वाले विशेष आकस्मिक अवकाश का इन्द्राज सेवा पुस्तिका में प्रथम नियुक्ति से सेवानिवृत्ति तक अथवा कार्मिक की मृत्यु होने तक का सम्पूर्ण इतिहास एवं अन्य विवरण इस में संधारित किया जाता है । इसी विवरण के आधार पर पेंशन कुलक (Pension Calculation) तैयार किया जाता है एवं मूल सेवापुस्तिका भी पेंशन कुलक के साथ भुगतान हेतु संलग्न की जाती है । कार्मिक की सेवा पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर कार्मिक का नाम एवं पदनाम दर्शाया जाता है मुख्य पृष्ठ का नमूना नीचे दर्शाया गया है:

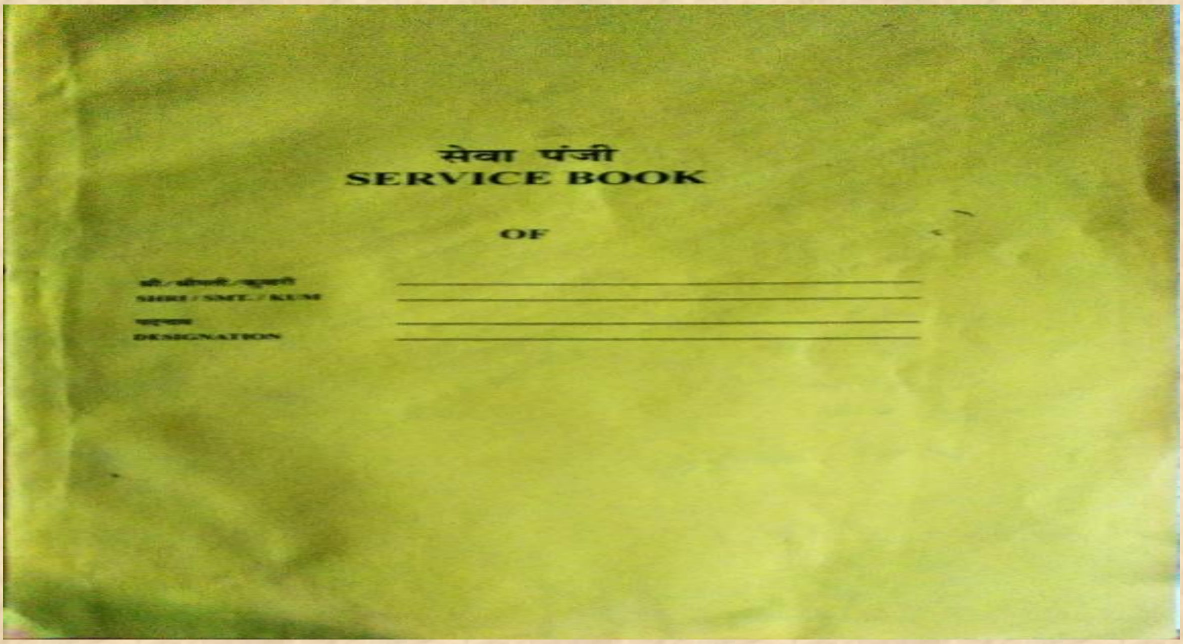

यदि एक ही भवन में एक से अधिक कार्यालय हैं और उनमें कार्यरत कार्मिकों की सेवा पुस्तिका का संधारण किसी एक विभाग के प्रशासनिक अनुभाग द्वारा किया जाता है तो कार्मिक के पदनाम के नीचे कार्मिक के कार्यालय का नाम भी अंकित किया जाता है ।

सामान्यतः इस सेवा पुस्तिका के निम्नलिखित भाग होते हैं, जिनमें कार्मिक के पूरे सेवाकाल का विवरण दर्ज किया जाता है:

भाग	विषय सूची
I	जीवन वृत्त
II	प्रमाण पत्र और साक्ष्यांकन
III	पिछली अर्हक सेवा और विदेश सेवा
IV	सेवा का इतिवृत्त
V	सेवा सत्यापन का अभिलेख
VI	अवकाश खाता
VII	प्राप्त की गई छुट्टी यात्रा का विवरण, भवन निर्माण अग्रिम का विवरण, केन्द्रीय सरकारी कर्मचारी की समूह बीमा योजना के अंशदान का विवरण
VIII	आंतरिक लेखापरीक्षा की टिपण्णी
परिशिष्ट	दी गई सेवा का सार

यद्यपि उक्त सभी भाग (भाग संख्या VIII एवं परिशिष्ट के अतिरिक्त, जो सेवा पुस्तिका संधारित करने वाले अनुभाग/विभाग से सम्बंधित है) अपने-आप में महत्वपूर्ण है, तथापि भाग संख्या I से VII (जिनकी जानकारी प्रत्येक शासकीय कर्मचारी के लिए आवश्यक है) का संक्षिप्त विवरण निम्नुसार है:

भाग-I (जीवन वृत्त)

इस भाग में सभी प्रविष्टियाँ कर्मचारी की प्रथम नियुक्ति के समय की जाती है और इनका साक्ष्यांकन कार्यालय अध्यक्ष या उसके द्वारा नामित किसी अधिकारी द्वारा की जाती है । इस भाग में होने वाले परिवर्तन और संशोधन का साक्ष्यांकन भी कार्यालय अध्यक्ष या उसके द्वारा नामित किसी अधिकारी द्वारा किया जाता है । इस भाग का नमूना नीचे दर्शाया गया है:

इस भाग के प्रथम बॉक्स में सम्बंधित कार्मिक का नियुक्ति के समय का पासपोर्ट आकार (3 सेमी. X 3 सेमी.) का फोटो चस्पा किया जाता है जिसका साक्ष्यांकन कार्यालय अध्यक्ष या उसके द्वारा नामित किसी अधिकारी द्वारा किया जाता है । तत्पश्चात कार्मिक के सेवाकाल के प्रत्येक 10 वर्षों के अन्तराल पर उसका नवीनतम पासपोर्ट आकार (3 सेमी. X 3 सेमी.) का फोटो आगामी बक्सों में चस्पा किया जाता है जिसका साक्ष्यांकन भी कार्यालय अध्यक्ष या उसके द्वारा नामित किसी अधिकारी द्वारा किया जाता है । इस भाग में कार्मिक का पूरा नाम, पिताजी एवं माताजी का नाम हिंदी एवं अंग्रेजी में साफ अक्षरों में दसवी परीक्षा पास करने के प्रमाण के आधार पर लिखा जाता है । कार्मिक की जन्म तिथि भी दसवी परीक्षा पास करने के प्रमाण के आधार पर

दर्ज की जाती है । जिसका साक्ष्यांकन भी कार्यालय अध्यक्ष या उसके द्वारा नामित किसी अधिकारी द्वारा किया जाता है । इसी भाग में कार्मिक की जाति (नगर-निगम/नगर-पालिका/प्रथम न्यायिक मजिस्ट्रेट द्वारा जारी प्रमाण-पत्र के आधार पर) एवं राष्ट्रीयता का भी अंकन किया जाता है ।

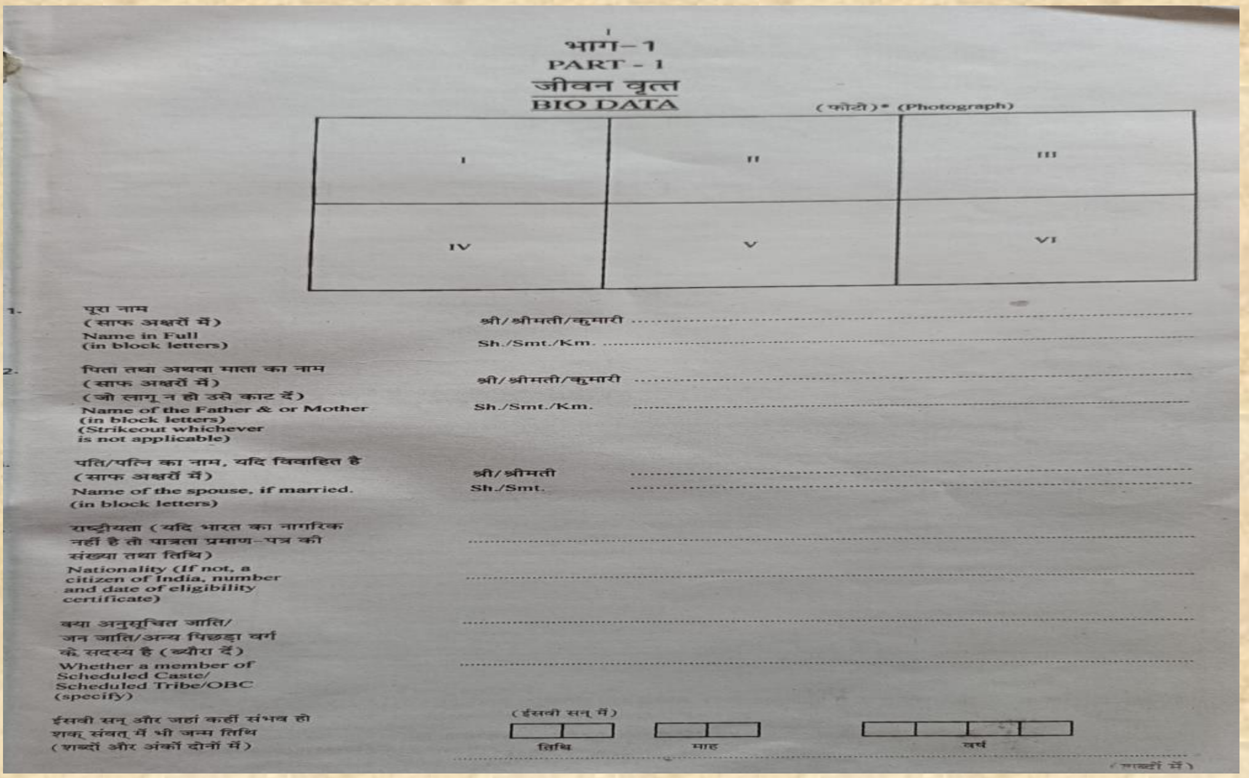

भाग–1
PART - 1
जीवन वृत्त
BIO DATA

(फोटो)* (Photograph)

I	II	III
IV	V	VI

1\. पूरा नाम (साफ अक्षरों में) / Name in Full (in block letters) — श्री/श्रीमती/कुमारी .... / Sh./Smt./Km. ....

2\. पिता तथा अथवा माता का नाम (साफ अक्षरों में) (जो लागू न हो उसे काट दें) / Name of the Father & or Mother (in block letters) (Strikeout whichever is not applicable) — श्री/श्रीमती/कुमारी .... / Sh./Smt./Km. ....

पति/पत्नि का नाम, यदि विवाहित है (साफ अक्षरों में) / Name of the spouse, if married. (in block letters) — श्री/श्रीमती .... / Sh./Smt. ....

राष्ट्रीयता (यदि भारत का नागरिक नहीं है तो पात्रता प्रमाण–पत्र की संख्या तथा तिथि) / Nationality (If not, a citizen of India, number and date of eligibility certificate) ....

क्या अनुसूचित जाति/जन जाति/अन्य पिछड़ा वर्ग के सदस्य है (ब्यौरा दें) / Whether a member of Scheduled Caste/ Scheduled Tribe/OBC (specify) ....

ईसवी सन् और जहां कहीं संभव हो शक संवत् में भी जन्म तिथि (शब्दों और अंकों दोनों में) — (ईसवी सन् में) तिथि / माह / वर्ष .... (शब्दों में)

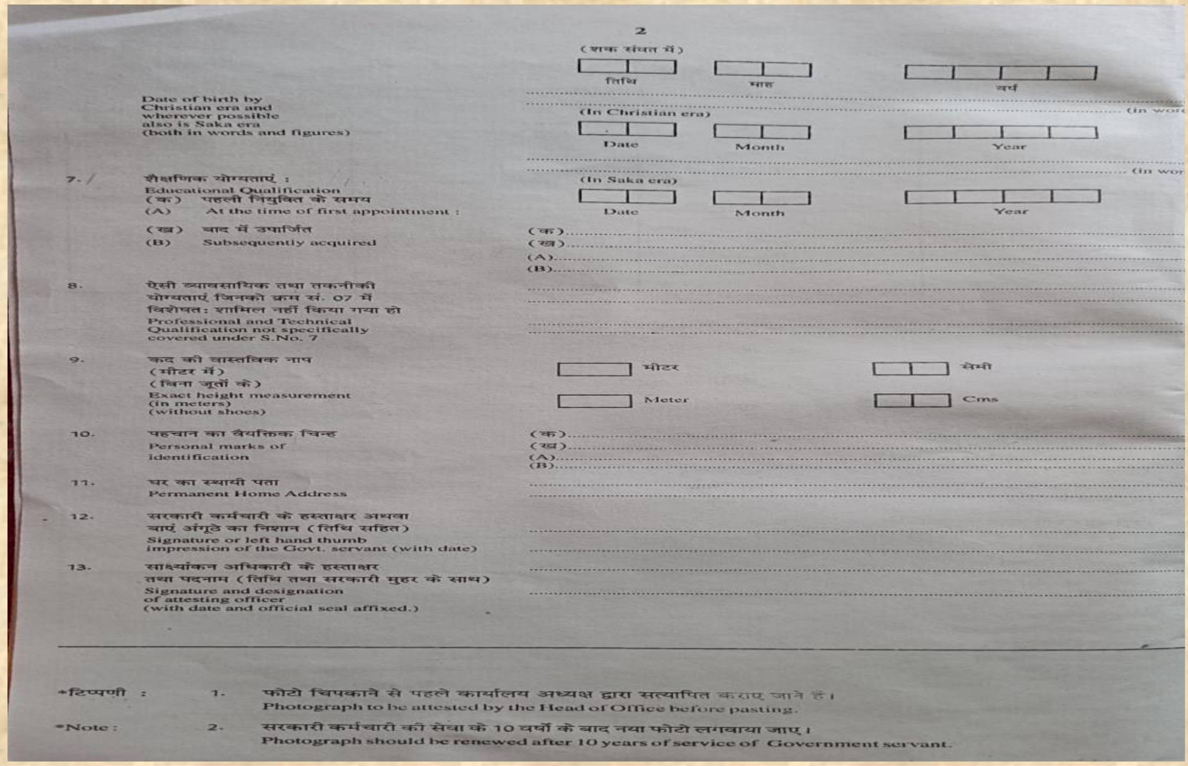

2

(शक संवत में) तिथि / माह / वर्ष

Date of birth by Christian era and wherever possible also is Saka era (both in words and figures) — .... (in words) (In Christian era) Date / Month / Year .... (in words) (In Saka era) Date / Month / Year

7\. शैक्षणिक योग्यताएं : / Educational Qualification
(क) पहली नियुक्ति के समय / (A) At the time of first appointment :
(ख) बाद में उपार्जित / (B) Subsequently acquired
(क)........ (ख)........ (A)........ (B)........

8\. ऐसी व्यावसायिक तथा तकनीकी योग्यताएं जिनको क्रम सं. 07 में विशेषत: शामिल नहीं किया गया हो / Professional and Technical Qualification not specifically covered under S.No. 7 ....

9\. कद की वास्तविक नाप (मीटर में) (बिना जूतों के) / Exact height measurement (in meters) (without shoes) — मीटर / Meter; सेमी / Cms

10\. पहचान का वैयक्तिक चिन्ह / Personal marks of identification — (क)........ (ख)........ (A)........ (B)........

11\. घर का स्थायी पता / Permanent Home Address ....

12\. सरकारी कर्मचारी के हस्ताक्षर अथवा बाएं अंगूठे का निशान (तिथि सहित) / Signature or left hand thumb impression of the Govt. servant (with date) ....

13\. साक्ष्यांकन अधिकारी के हस्ताक्षर तथा पदनाम (तिथि तथा सरकारी मुहर के साथ) / Signature and designation of attesting officer (with date and official seal affixed.) ....

*टिप्पणी : 1. फोटो चिपकाने से पहले कार्यालय अध्यक्ष द्वारा सत्यापित कराए जाते हैं। Photograph to be attested by the Head of Office before pasting.

*Note : 2. सरकारी कर्मचारी की सेवा के 10 वर्षों के बाद नया फोटो लगवाया जाए। Photograph should be renewed after 10 years of service of Government servant.

इसी भाग के दूसरे पृष्ठ पर नियुक्ति के समय कार्मिक की अंतिम शैक्षणिक योग्यता का विवरण दर्ज किया जाता है । जिसका साक्ष्यांकन भी कार्यालय अध्यक्ष या उसके द्वारा नामित किसी अधिकारी द्वारा किया जाता है । यदि कार्मिक नियुक्ति के बाद अन्य कोई शैक्षणिक योग्यता अर्जित करता है तो उसके द्वारा प्रस्तुत प्रमाण के आधार पर कार्यालय अध्यक्ष या उसके द्वारा नामित किसी अधिकारी द्वारा नियमानुसार इसका इन्द्राज सेवा पुस्तिका में किया जाता है ।

इसी भाग के दूसरे पृष्ठ पर नियुक्ति के समय कार्मिक की तकनीकी योग्यता, कार्मिक की ऊंचाई, पहचान के व्यक्तिगत चिन्ह एवं कार्मिक का स्थायी पता भी दर्ज किया जाता है ।

इसी पृष्ठ पर सम्बंधित कार्मिक के हस्ताक्षर एवं बाएं हाथ के अंगूठे का निशान कार्यालय अध्यक्ष या उसके द्वारा नामित किसी अधिकारी की उपस्थिति में लिया जाता है ।

भाग-II (प्रमाण-पत्र और साक्ष्यांकन)

इसके दो उप-भाग होते है, पहला अपरिवर्तनीय एवं दूसरा परिवर्तनीय ।

उप-भाग । (अपरिवर्तनीय)

इस भाग में सभी प्रविष्टियाँ (मद संख्या 8 के अतिरिक्त) कर्मचारी की प्रथम नियुक्ति के समय की जाती है और इनका साक्ष्यांकन कार्यालय अध्यक्ष या उसके द्वारा नामित किसी अधिकारी द्वारा किया जाता है । इस उप-भाग का नमूना नीचे दर्शाया गया है: इस उप-भाग में सम्मिलित की जाने वाली मदों का विवरण निम्नानुसार है: -

स्वास्थ्य परीक्षा: इस मद में कर्मचारी की नियुक्ति से पूर्व उसके द्वारा करवाए गए स्वास्थ्य जांच का विवरण दर्ज करते हुए मूल परिक्षण पत्र कार्मिक की व्यक्तिगत पत्रावली में भविष्य के संदर्भ हेतु नत्थी किया जाता है ।

चरित्र एवं पूर्ववृत्त: इस मद में कर्मचारी की नियुक्ति के बाद उसके चाल चलन एवं चरित्र का सत्यापन उसके गृह नगर के सम्बंधित जिलाधीश एवं पुलिस अधीक्षक से करवाए जाने के बाद सत्यापन रिपोर्ट का विवरण दर्ज करते हुए मूल सत्यापन रिपोर्ट कार्मिक की व्यक्तिगत पत्रावली में भविष्य के संदर्भ हेतु नत्थी किया जाता है ।

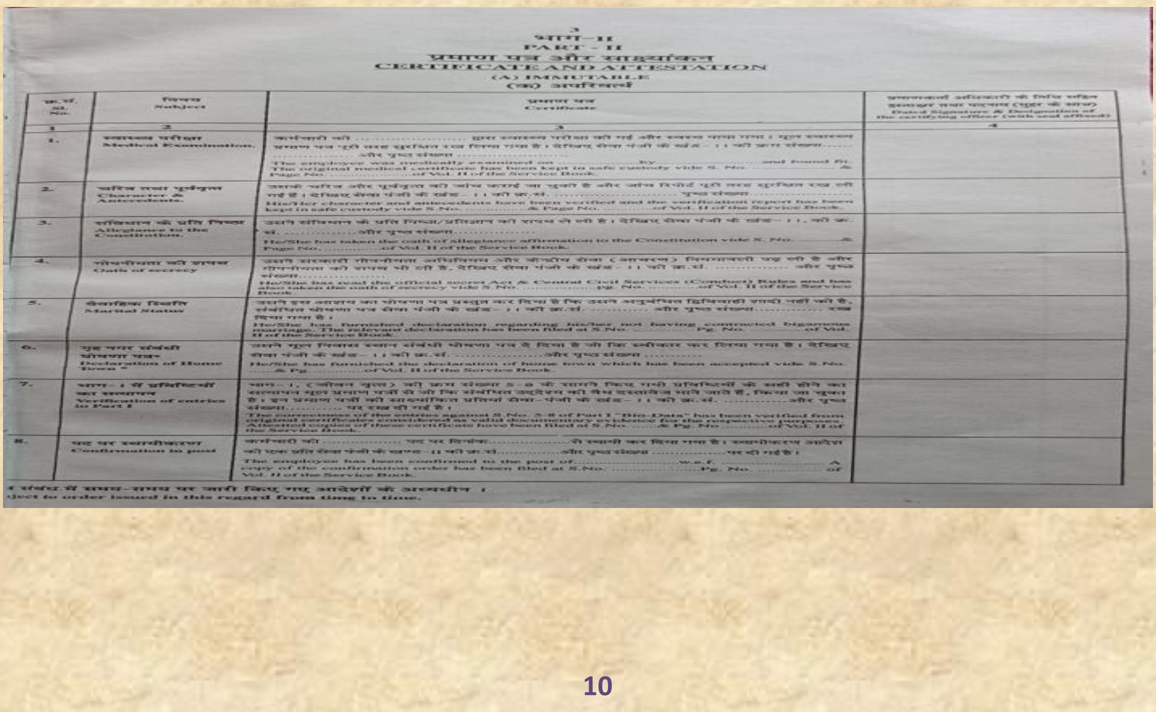

3

भाग–II

PART - II

प्रमाण पत्र और साक्ष्यांकन

CERTIFICATE AND ATTESTATION

(A) IMMUTABLE

(क) अपरिवर्त्य

क्र.सं. S. No.	विषय Subject	प्रमाण पत्र Certificate	Dated Signature & Designation of the certifying officer (with seal affixed)
1	2	3	4
1.	स्वास्थ्य परीक्षा Medical Examination.	[illegible] The employee was medically examined on .... by .... and found fit. The original medical certificate has been kept in safe custody vide S. No. .... & Page No. .... of Vol. II of the Service Book.	
2.	चरित्र तथा पूर्ववृत्त Character & Antecedents.	[illegible] His/Her character and antecedents have been verified and the verification report has been kept in safe custody vide S.No. .... & Page No. .... of Vol. II of the Service Book.	
3.	संविधान के प्रति निष्ठा Allegiance to the Constitution.	[illegible] He/She has taken the oath of allegiance affirmation to the Constitution vide S. No. .... & Page No. .... of Vol. II of the Service Book.	
4.	गोपनीयता की शपथ Oath of secrecy	[illegible] He/She has read the official secret Act & Central Civil Services (Conduct) Rules and has also taken the oath of secrecy vide S.No. .... pg. No. .... of Vol. II of the Service Book.	
5.	वैवाहिक स्थिति Marital Status	[illegible] He/She has furnished declaration regarding his/her not having contracted bigamous marriage. The relevant declaration has been filed at S.No. .... Pg. No. .... of Vol. II of the Service Book.	
6.	गृह नगर संबंधी घोषणा पत्र* Declaration of Home Town *	[illegible] He/She has furnished the declaration of home town which has been accepted vide S.No. .... & Pg. .... of Vol. II of the Service Book.	
7.	भाग–I में प्रविष्टियों का सत्यापन Verification of entries in Part I	[illegible] The correctness of the entries against S.No. 5-8 of Part I "Bio-Data" has been verified from original certificates considered as valid documentary evidence for the respective purposes. Attested copies of these certificate have been filed at S.No. .... & Pg. No. .... of Vol. II of the Service Book.	
8.	पद पर स्थायीकरण Confirmation in post	[illegible] The employee has been confirmed in the post of .... w.e.f. .... A copy of the confirmation order has been filed at S.No. .... Pg. No. .... of Vol. II of the Service Book.	

* संबंध में समय-समय पर जारी किए गए आदेशों के अध्यधीन ।

...ject to order issued in this regard from time to time.

संविधान के प्रति निष्ठा: इस मद में कर्मचारी की नियुक्ति के समय उसे सविधान के प्रति दिलाई गयी शपथ का विवरण दर्ज करते हुए सम्बंधित पंजिका में कर्मचारी के हस्ताक्षर के बाद पंजिका का क्रम संख्या एवं पृष्ठ संख्या इस मद में दर्ज किया जाता है ।

गोपनीयता की शपथ: इस मद में कर्मचारी की नियुक्ति के समय उसे सरकार एवं सरकारी कामकाज की गोपनीयता बनाये रखने की शपथ दिलाने का विवरण दर्ज करते हुए सम्बंधित पंजिका में कर्मचारी के हस्ताक्षर के बाद पंजिका का क्रम संख्या एवं पृष्ठ संख्या इस मद में दर्ज किया जाता है । वैवाहिक स्थिति: इस मद में कर्मचारी की नियुक्ति के समय उसकी वैवाहिक स्थिति का विवरण दर्ज करते हुए मूल विवरण-पत्र कार्मिक की व्यक्तिगत पत्रावली में भविष्य के संदर्भ हेतु नत्थी किया जाता है।

गृह नगर सम्बन्धी घोषणा-पत्र: इस मद में कर्मचारी की नियुक्ति के समय उसके मूल निवास स्थान सम्बन्धी घोषणा-पत्र पूर्ण एवं सही रूप से भरकर देने का विवरण दर्ज करते हुए मूल विवरण-पत्र कार्मिक की व्यक्तिगत पत्रावली में भविष्य के संदर्भ हेतु नत्थी किया जाता है।

भाग-1 (जीवनवृत्त) में दर्ज प्रविष्टियों का सत्यापन: इस मद में कर्मचारी की नियुक्ति के समय भाग-I की क्रम संख्या 5 से 8 के सम्मुख की गयी सभी प्रविष्टियों के सही होने का सत्यापन मूल वैध दस्तावेजों/प्रमाण-पत्रों से करने का विवरण दर्ज करते हुए मूल प्रमाण-पत्रों की साक्ष्यांकित प्रतियाँ कार्मिक की व्यक्तिगत पत्रावली में भविष्य के संदर्भ हेतु नत्थी की जाती है ।

पद पर स्थायीकरण: नियुक्ति के बाद कर्मचारी अपना परिवीक्षाकाल जिस दिनांक को पूर्ण कर लेता है एवं उसे उस पद पर स्थायी रूप से नियुक्त कर दिये जाने का विवरण इस मद में दर्ज किया जाता है एवं सम्बंधित प्रशासन अनुभाग से जारी स्थायीकरण के आदेश की प्रति कार्मिक की व्यक्तिगत पत्रावली में भविष्य के संदर्भ हेतु नत्थी की जाती है ।

उप-भाग II (परिवर्तनीय)

इस भाग में सभी प्रविष्टियाँ कर्मचारी की नियुक्ति के बाद उसके द्वारा समय-समय पर प्रस्तुत किये गए विवरण के आधार पर इसमें दर्ज की जाती है और इनका साक्ष्यांकन कार्यालय अध्यक्ष या उसके द्वारा नामित किसी अधिकारी द्वारा किया जाता है । इस उप-भाग का नमूना नीचे दर्शाया गया है:

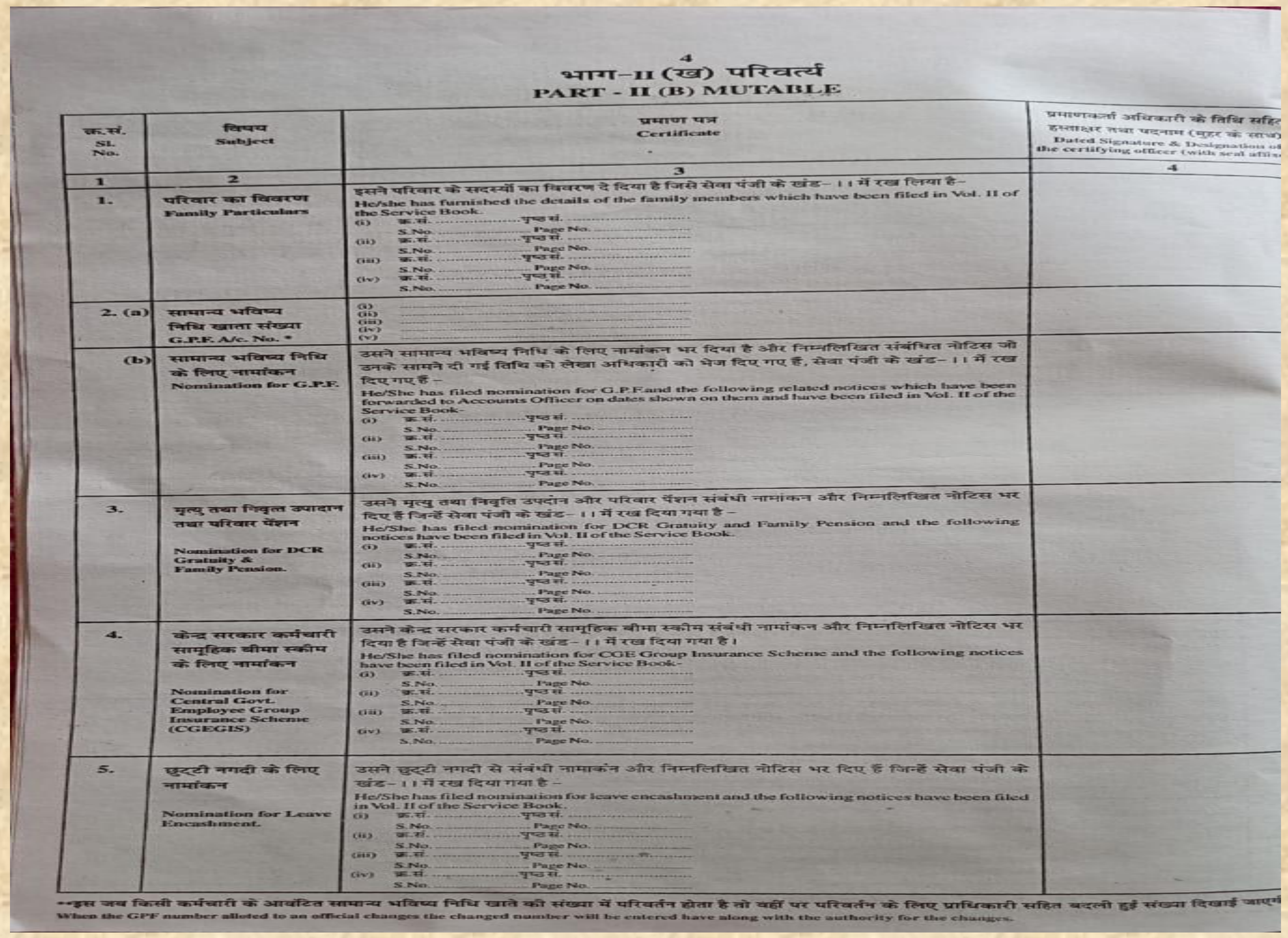

4

भाग–II (ख) परिवर्त्य

PART - II (B) MUTABLE

क्र.सं. Sl. No.	विषय Subject	प्रमाण पत्र Certificate	प्रमाणकर्ता अधिकारी के तिथि सहित हस्ताक्षर तथा पदनाम (मुहर के साथ) Dated Signature & Designation of the certifying officer (with seal affixed)
1	2	3	4
1.	परिवार का विवरण Family Particulars	इसने परिवार के सदस्यों का विवरण दे दिया है जिसे सेवा पंजी के खंड– ।। में रख लिया है– He/she has furnished the details of the family members which have been filed in Vol. II of the Service Book. (i) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (ii) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (iii) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (iv) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ………	
2. (a)	सामान्य भविष्य निधि खाता संख्या G.P.F. A/c. No. *	(i) ……… (ii) ……… (iii) ……… (iv) ……… (v) ………	
(b)	सामान्य भविष्य निधि के लिए नामांकन Nomination for G.P.F.	उसने सामान्य भविष्य निधि के लिए नामांकन भर दिया है और निम्नलिखित संबंधित नोटिस जो उनके सामने दी गई तिथि को लेखा अधिकारी को भेज दिए गए हैं, सेवा पंजी के खंड– ।। में रख दिए गए हैं – He/She has filed nomination for G.P.F.and the following related notices which have been forwarded to Accounts Officer on dates shown on them and have been filed in Vol. II of the Service Book- (i) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (ii) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (iii) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (iv) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ………	
3.	मृत्यु तथा निवृत्त उपादान तथा परिवार पेंशन Nomination for DCR Gratuity & Family Pension.	उसने मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान और परिवार पेंशन संबंधी नामांकन और निम्नलिखित नोटिस भर दिए हैं जिन्हें सेवा पंजी के खंड– ।। में रख दिया गया है – He/She has filed nomination for DCR Gratuity and Family Pension and the following notices have been filed in Vol. II of the Service Book. (i) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (ii) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (iii) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (iv) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ………	
4.	केन्द्र सरकार कर्मचारी सामूहिक बीमा स्कीम के लिए नामांकन Nomination for Central Govt. Employee Group Insurance Scheme (CGEGIS)	उसने केन्द्र सरकार कर्मचारी सामूहिक बीमा स्कीम संबंधी नामांकन और निम्नलिखित नोटिस भर दिया है जिन्हें सेवा पंजी के खंड– ।। में रख दिया गया है। He/She has filed nomination for CGE Group Insurance Scheme and the following notices have been filed in Vol. II of the Service Book- (i) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (ii) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (iii) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (iv) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ………	
5.	छुट्टी नगदी के लिए नामांकन Nomination for Leave Encashment.	उसने छुट्टी नगदी से संबंधी नामाकंन और निम्नलिखित नोटिस भर दिए हैं जिन्हें सेवा पंजी के खंड– ।। में रख दिया गया है – He/She has filed nomination for leave encashment and the following notices have been filed in Vol. II of the Service Book. (i) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (ii) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (iii) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ……… (iv) क्र.सं. ………पृष्ठ सं. ……… S.No. ……… Page No. ………	

*इस जब किसी कर्मचारी के आवंटित सामान्य भविष्य निधि खाते की संख्या में परिवर्तन होता है तो वहाँ पर परिवर्तन के लिए प्राधिकारी सहित बदली हुई संख्या दिखाई जाएगी
When the GPF number alloted to an official changes the changed number will be entered have along with the authority for the changes.

शेष अगले अंक में...........

राजीव भाटिया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भाई

एक शब्द में दो अक्षर,

निहितार्थ है जिसमें,

जिन्दगी का सफर !

भाई !!

शरीर की एक भुजा,

जिसका विकल्प नही दूजा !

भाई !!

बचपन की यादों का,

जवानी के संघर्षों का,

हर घटना का साथी-साक्षी !

भाई !!

बडा है तो पितृ तुल्य,

जिन्दगी का पहरेदार !

भाई !!

छोटा है तो पुत्र तुल्य,

जिन्दगी का सेवादार !

मेरा भाई, मेरा साथी,

मेरा संरक्षक, मेरा सबकुछ,

अब रूठ गया, अब खो गया,

न अब मना सकता हूँ,

न अब खोज सकता हूँ,

काल के क्रूर हाथ ने जो छीन लिया

जीवन पथ पर एक हाथ का साथ जो छूट गया

भाई था, तब जिम्मेदारियों से मुक्त था,

तब मै निश्चिन्त था !

भाई था,

मैं बेपरवाह लापरवाह,

मस्ती मे मस्त था !

मेरा यह कहना है,

भाई !!

रूठा है तो मनालो,

खोया है तो उसे खोज लो,

बहूत दूर जाने से पहले ,

छोटा है तो उसे, गले लगा लो !

बडा है तो , समझो बहुत भाग्यशाली हो !

नतमस्तक होकर क्षमा मांग लो !

भाई !!

है तो पूरी जिन्दगी का सम्पूर्ण वृतचित्र है !

नही तो अधूरापन खालीपन का अहसास है !

पंच रतन हर्ष

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन के प्रति तीन दृष्टिकोण

एक नया मंदिर बन रहा था। उस मार्ग से जाता हुआ एक यात्री, नए निर्मित मंदिर को देखने के लिए रुक गया। मजदूर काम कर रहे थे। न मालूम कितने लोग पत्थर तोड़ रहे थे। एक पत्थर तोड़ने वाले मजदूर के पास वह यात्री रुका। उसने पूछा- मेरे मित्र, तुम क्या कर रहे हो? उस पत्थर तोड़ते मजदूर ने क्रोध से अपने हथोड़े को रोका और उस यात्री की तरफ देखा और कहा- क्या अंधे हो? दिखाई नहीं पड़ता है ? मैं पत्थर तोड़ रहा हूँ। यात्री आगे बढ़ा और उसने एक दूसरे पत्थर तोड़ते हुए मजदूर से पूछा- क्या कर रहे हो? उस आदमी ने उदासी से आँखें उपर उठाते हुए कहा- कुछ नहीं कर रहा हूँ, रोजी रोटी कमा रहा हूँ। इतना कहकर वह वापिस पत्थर तोड़ने लग गया।

अब वह यात्री आगे बढ़ा और मंदिर की सीढ़ियों के पास पत्थर तोड़ते हुए तीसरे मजदूर से उसने पूछा- मित्र क्या कर रहे हो? वह आदमी गीत गुनगुना रहा था और पत्थर भी तोड़ रहा था। उसने आँखें उपर उठाई उसकी आँखों में ख़ुशी थी। वह बड़े भाव से बोला- "मैं भगवान का मंदिर बना रहा हूँ।" फिर वह गीत गुनगुनाते हुए पत्थर तोड़ने लगा।

वह यात्री चकित खड़ा हो गया और उसने कहा कि तीनों लोग पत्थर तोड़ रहे हैं। लेकिन पहला आदमी क्रोध से कहता है कि पत्थर तोड़ रहा हूँ, आप अंधे है, दिखाई नहीं पड़ता? दूसरा आदमी भी पत्थर तोड़ता है लेकिन वह उदासी से कहता है कि- मैं रोजी रोटी कमा रहा हूँ। तीसरा आदमी भी पत्थर तोड़ रहा है लेकिन वह आनन्द से गीत गाते हुए कह रहा है कि मैं भगवान का मंदिर बना रहा हूँ ।

यह जो तीन मजदूर थे उस मंदिर को बनाने वाले, करीब-करीब हम भी इस तरह के लोग हैं जो जीवन के मंदिर को निर्मित करते हैं। हम सभी जीवन के मंदिर को निर्मित करते हैं लेकिन कोई जीवन के मंदिर को निर्मित करते समय काम, क्रोध और लोभ से भरा रहता है क्योंकि वह पत्थर (जीवन) तोड़ रहा है। कोई उदासी से भरा रहता है क्योंकि वह केवल रोजी-रोटी कमा अपना और अपने परिवार का पेट पाल रहा है। लेकिन कोई आनन्द से भर जाता है क्योंकि वह परमात्मा का मंदिर (जीवन रूपी मंदिर) बना रहा है।

जीवन को हम जैसा देखते हैं और जीवन को देखने कि जो हमारी चित्तदशा होती है, वही हमारे जीवन की अनुभूति भी बन जाती है। जीवन को देखने की जो हमारी भाव दृष्टि होती है, वही हमारे जीवन का अनुभव, जीवन की प्रतीति, और जीवन का साक्षात्कार भी बन जाती है।

पत्थर तोड़ते हुए से भगवान का मंदिर बनाने की जिसकी दृष्टि है, वह बन भी जाएगा और हो सकता है की पत्थर तोड़ते-तोड़ते उसे भगवान से मिलन भी हो जाए। क्योंकि

ऐसी आनंद की मनःस्थिति पत्थर में भी भगवान को खोज लेती है। आनन्द के अतिरिक्त परमात्मा के निकट पहुंचने का और कोई द्वार नहीं है। लेकिन जो क्रोध और पीड़ा में दुःखी मन से काम कर रहा हो, उसे भगवान की मूर्ति में भी सिवाय पत्थर के और कुछ भी नहीं मिल सकता। क्रोध की दृष्टि पत्थर के अतिरिक्त कुछ भी उपलब्ध नहीं करा पाती है। जो उदास है और जो दुःखी है, वह अपनी उदासी और दुःख को ही पूरे जीवन में फैला हुआ देखले तो आश्चर्य नहीं है। हम वहीं अनुभव करते हैं जो हम होते हैं। हम वहीं देख पाते हैं जो हमारी देखने की दृष्टि होती है या जो हमारा अन्तर्भाव होता है। अतः हम सभी का जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए।

रामनारायण
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

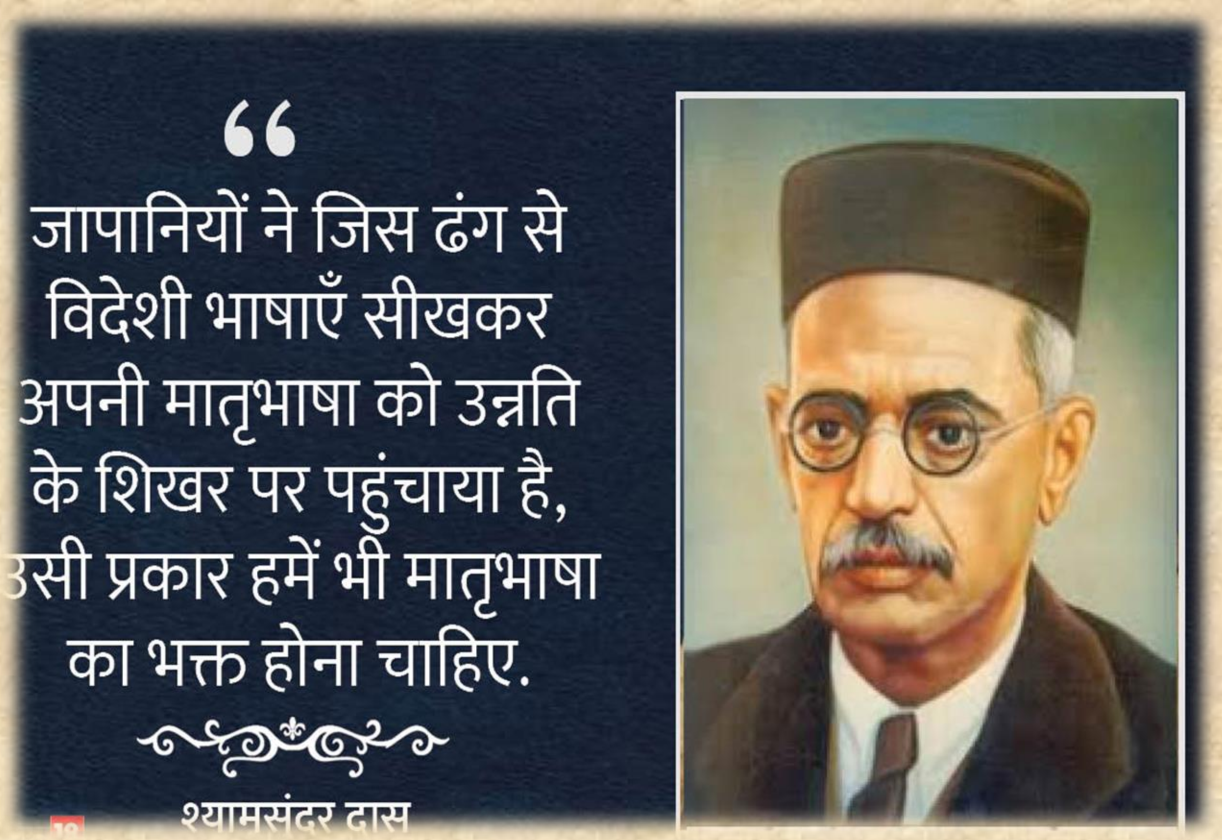

भगवद्गीता और विज्ञान

भारत देश को विश्वगुरू कहा जाता है । यहां की गूढ ज्ञानराशि ही भारत को गुरूत्व पदवी पर प्रतिष्ठित करती है । इह लोक तथा परलोक तक की समस्त व्यवस्थाऐं, शास्त्रों, वेद, पुराण, उपनिषद्, आर्य ग्रंथों आदि में वर्णित है । ज्ञानपुंज के एक समूह को प्रस्थानत्रयी के नाम से जाना जाता है, जिसमें ब्रह्मसूत्र, उपनिषद और भगवद्गीता हैं। ये तीनों भौतिक जगत, व्यवहारिक चिन्तन एवं सुविचारों का प्रत्यक्ष करवाने में तो सक्षम हैं ही, साथ ही मनुष्य को आत्मतत्व से साक्षात्कार कराने में और देहान्तरगति का प्रत्यक्ष करवाने में भी समर्थ है ।

श्री मद्भगवद् गीता पर अनेक व्याख्याएं, टीकाएं, भावार्थ, पद्यानुवाद, सामाजिक, आध्यात्मिक, प्रबन्ध चिंतनपरक समीक्षाएं लिखी गई हैं तथापि प्रत्येक विषय अपनी प्रतिष्ठित स्थापना के लिए वैज्ञानिक चिन्तन की अपेक्षा रखता है। सर्वप्रथम गीता के रचयिता कृष्णद्वैपायन व्यास स्वयं एक दिव्य पुरूष हैं। अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य एवं परशुराम सात अमर हुए हैं । महाभारत के प्रणेता कृष्णद्वैपायन व्यास हुए । महाभारत के भीष्मपर्व के पच्चीसवें अध्याय से बियालिसवें अध्याय को ही श्रीमद्भगवद्गीता कहा गया है। श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से नि:सृत गीता अद्वितीय एवं परम पवित्र कही गई है ।

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यै: शास्त्रविस्तरै:।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनि: सृता ।।

कुरूक्षेत्र में महाभारत के युद्ध के लिए दो सेनाएं उपस्थित हैं । कौरवों की तरफ ग्यारह अक्षौहिणी सेना और पाण्डवों की तरफ सात अक्षौहिणी सैना खड़ी है । दोनों ओर भाई, सगे-संबंधी, गुरूजन एवं पूज्यवृन्द हैं । दोनों सेनाओं के मध्य विशाल रथ खड़ा है जिस पर सारथी श्रीकृष्ण तथा रथ पर अर्जुन सवार है । अर्जुन सेना को देखकर अधर्म की आशंका से युद्ध करने में संकोच कर रहा है । अपने मित्र श्रीकृष्ण को कल्याण चाहते हुए निवेदन करते है कि मैं किंकर्तव्यविमूढ हो गया हूँ । अपनों के साथ कैसे युद्ध कर सकता हूँ ? आपको जो मेरे लिए श्रेयस्कर मार्ग लगे, वह बताइए। इस प्रश्न को सुनकर भगवान श्रीकृष्ण अत्यंत विलक्षण ढंग से अपना उपदेश प्रारम्भ करते हैं । गीता योग है । योग पद 'युज्' धातु से बना है । युज् धातु के तीन अर्थ हैं- योग, समाधि एवं संयमन । युज्-योग का भाव है, जीवात्मा का परमात्मा के साथ नित्य सम्बन्ध । युज्-समाधि का भाव है, चितवृत्तियों का निरोध होकर साधक का स्वस्वरूप में अवस्थित होना । युज्-संयमने का भाव है, सामर्थ्य साधकर स्थिरता धारण करना । योग पद का अर्थ हुआ कर्मो में कुशलता । जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होने के लिए,

आत्म साक्षात्कार करने के लिए योग ही एकमात्र साधन है । योग विधा के प्रभाव से मनुष्य में पाश्विक वृत्तियों का नाश होता है तथा मनुष्य देवत्व की ओर बढ़ता है । अलौकिक शक्तियां प्राप्त करने के लिए योग ही एकमात्र साधन है ।

श्रीमद्भगवद्गीता में प्राणीमात्र के कल्याण के लिए तीन योग-मार्गों का वर्णन प्राप्त है । कर्मयोग, ज्ञानयोग तथा भक्तियोग । श्रीमद्भगवद्गीता (11/20/6) में भगवान कहते हैं- प्राणियों के कल्याण के लिए ज्ञान, कर्म और भक्ति यही मार्ग हैं, इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है । अध्यात्मरामायण और देवीभागवत भी भक्ति, ज्ञान और कर्मयोग से ही मोक्षप्राप्ति बताते हैं।

मार्गस्त्रयो मया प्रोक्ता पुरा मोक्षप्राप्तिसाधका:।
कर्मयोगो ज्ञानयोगो भक्तियोगश्च शाश्वत:।। (अध्यात्म रामायण (7/7/59))

जगत् की उत्पत्ति एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है । इस जीव विज्ञान से ही सृष्टि बनी है और इसी से विस्तार को प्राप्त कर रही है । लोक व्यवहार में कदाचित् हास-परिहास में हम सुनते व बोलते हैं, मुर्गी पहले आई या अण्डा, बीज पहले हुआ या अंकुर, किन्तु ये सब विषय सहस्यमयी प्रक्रिया में आते हैं । श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार योग विज्ञान चिरन्तर एवं शाश्वत है ।

जिज्ञासा होती है कि कर्म, ज्ञान और भक्ति योग में ऐसा क्या है जिससे भवबन्धन का और मोक्ष का संबंध है?

कर्मयोग- कर्मयोग अर्थात् करने का सामर्थ्य । जिस व्यक्ति में जितना सामर्थ्य हो, वह कर्मयोग के माध्यम से कृत्य और अकृत्य अर्थात् करने योग्य और त्याज्य कर्मों का संधारण और निषेध करता हुआ अपना जीवन परोपकार में लगा दे । ईश्वर द्वारा हमें जो कर्म का सामर्थ्य दिया गया है, उसका कर्मयोगी बनकर निर्वाह करें यही कर्मयोग का वास्तविक अर्थ है । समाज में रहने वाले प्रत्येक प्राणी का यह मौलिक कर्तव्य बनता है कि वह अपने किसी भी प्रकार के कर्म से किसी अन्य प्राणी को क्षति न पहुंचाए और पुनीत एवं शिष्ट रहकर अपने कर्मयोग की साधना करें ।

ज्ञानयोग- ज्ञानयोग अर्थात् जानने का सामर्थ्य । कर्मयोगी मनुष्य को कर्मों का ज्ञान हो जाता है और ज्ञानयोगी मनुष्य स्वयं को कर्मों से असंग कर लेता है । ज्ञानमार्गी साधक परमात्मा की सत्यता और जगत की असत्यता को समझकर निर्लिप्त भाव से जगत में निवास करता है । दर्शन की भाषा में कहा जाता है कि ज्ञानयोग की अमावस्या में द्रष्टा अपने स्वरूप में अवस्थित हो जाता है । ज्ञान के प्रभाव से साधक की समस्त चितवृत्तियों का निरोध हो जाता है और संस्कार मात्र अवशिष्ट रहता है ।

भक्तियोग- भक्तियोग अर्थात् मानने का सामर्थ्य । स्वयं को उस परम सत्ता का और उस परम सत्ता को स्वयं का मानना ही भक्तियोग है । स्वयं के द्वारा किये जा रहे

समस्त कर्मों का फल परमात्मा को ही समर्पित हो, स्वयं भी परमात्म समर्पित हो, यही भक्तियोग है ।

इस कर्म, ज्ञान और भक्तियोग को श्रीमद्भगवद्गीता में महत् योग बताया गया है । लोक कल्याण की दृष्टि से इस योगविज्ञान का परिज्ञान सामाजिकों के लिए अपेक्षित है । गीता जी के प्रति मात्र आध्यात्मिक श्रद्धातिरेक से ही हमें योग स्वीकार नहीं करना चाहिए अपितु उसके गूढ तत्व को तथा उसकी कल्याणकारी नीति को समझकर इसमें प्रवेश करना चाहिए ।

मात्र आध्यात्मिक जगत की ही नहीं अपितु वैज्ञानिक जगत भी जड़ से (नश्वर सृष्टि) परे कोई विशिष्ट चेतन सत्ता के विद्यमान होने को स्वीकार करता है । जिसे विज्ञान की भाषा में Super Natural Power कहते हैं । इसके सार्वदेशिक, सार्वभौमिक तथा सार्वकालिक (Universal Omnipresent etc.) होने को भी विज्ञान स्वीकार करता है । अलबर्ट आइन्स्टीन ने स्वयं कहा है "मैं ईश्वर को मानता हूँ" । इस अविज्ञात सृष्टि के अद्भुत रहस्यों में ईश्वरीय शक्ति ही परिलक्षित होती है । विज्ञान भी सृष्टि के नियमन में एक अदृश्य शक्ति का होना स्वीकार करने लगा है। इस अदृश्य शक्ति की खोज के लिए विज्ञान ने भी अपना क्षेत्र परिवर्तित किया है । परमाणुओं के विघटन स्वरूप परमाणु का भी सूक्ष्म रूप न्यूट्रोन्स, उससे सूक्ष्म प्रोटोंस और उससे सूक्ष्म इलेक्ट्रॉन्स विज्ञान ने अन्वेषित किये हैं । प्रत्येक पदार्थ ऊर्जा का संघटित रूप (Concentrated form) है । आइन्स्टीन का Theory of Relativity भगवद्गीता के सापेक्ष दर्शन का ही प्रायोगिक स्वरूप है । चेतना का स्वभाव है संघात करना । भौतिक पदार्थों में एक अचिन्त्य बुद्धि विद्यमान है जो निरंतर संघात करती रहती है । तभी शरीर का बढना हम देख पाते हैं । विज्ञान ने ऐसे अनेक प्रयोग करने का प्रयास किया है जिसमें या तो वे जीव की उत्पत्ति बिना रज और वीर्य के कर पाएं या मृत देह को चेतना शक्ति के बिना चलायमान कर सकें । शरीर में से उस दिव्य चेतन शक्ति के निकलते ही शरीर देहमात्र रह जाता है । श्रीमद्भगवद्गीता के दसवें अध्याय के चौवालिसवें श्लोक मे स्वयं श्रीकृष्ण कहते हैं कि, हे अर्जुन ! मैं ही विराट पुरूष हूँ, मेरा ही अंश इस जीव में विद्यमान है, यह जो भी बलयुक्त दृश्यमान है सब मेरा ही अंश है । मेरे बिना कोई भी चर, अचर प्राणी नहीं है । तत्त्ववेत्ताओं के कण-कण में भगवान होने के सिद्धांत का विज्ञान भी समर्थन करता है ।

पदार्थविज्ञान (Physics) का सिद्धांत है कि जो पदार्थ पहले कभी नहीं था, वह नए सिरे से अत्पन्न नहीं हो सकता बल्कि नए रूप में रूपान्तरित हो सकता है । गीता भी कहती है कि जो सत् है उसका कभी अभाव नही होता, उसकी प्रतीति होती है । यथा आत्मा सत् है, सदैव विद्यमान है । शरीर होने पर उसका भान होता है और शरीर के नष्ट होने पर उसका अभाव अनुभूत होता है । जबकि वास्तव में आत्मा असंग है, सत् है । न मरता है, न उत्पन्न होता है हाँ, प्रतीत होता है ।

डॉ. रानी दाधीच
सहायक आचार्य
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविधालय जयपुर

गजल

जब इस उम्र पर आओ तो मुझसे बात करना ।

कभी इधर आओ प्रसंगवश, मुझसे मुलाकात करना ।।

मैं बताऊँगा तुम्हें जिन्दगी जीने का तरीका क्या है ।

मेरे बताए हुए अनुभवों पर ऐसे ही मत आघात करना ।।

सफलता और असफलता को रखना किनारे पर ।

जिन्दगी सहज ही जीना, खराब मत हालात करना ।।

काल की अबाध गति को रोक पाना मुश्किल है ।

कर्म ही जीवन है, इससे अधिक मत करामात करना ।।

इर्द गिर्द तुम्हारे बस राख ही शेष बचती है ।

लपेटो देह में इसको, इससे अधिक मत खुराफात करना ।।

लक्ष्य क्या है, रास्ते क्या हैं, इनकी परवाह न करना ।

जीवन स्वप्न है, इस स्वप्न की हर कोशिश हिफाजत करना ।।

ग्रहण करना, "चरैवेती का सिद्धांत", तुम अपने जीवन में ।

काँटों से भरा जीवन है, पर इसकी तुम अदावत करना ।।

झूठ हो, फरेब हो, या कि चालाकियों में भरा जीवन ।

नतमस्तक मत हो जाना इसके आगे, इनकी बगावत करना ।।

रामानन्द शर्मा

(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षक

रामायण काल में नारी

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान सर्वोपरि है। उसे देवी के पद पर प्रतिष्ठित किया गया है। भारतीय नारी मूर्तिमान तपस्या है उसका जीवन सतत प्रज्ज्वलित होमकुण्ड है जो मृत्यु के पश्चात ही शान्त होता है। नारी सृष्टि का केन्द्र है, क्योंकि नारी के द्वारा ही सृष्टि का क्रम चलता है। नारी पुरुष की प्रेरणा है। भारतीय संस्कृति की पावन परम्परा में नारी को सदैव सम्मानीय स्थान प्राप्त हुआ है। नारी प्रेम, दया त्याग एवं श्रद्धा में शबरी की प्रतिमूर्ति है और ये आदर्श मानव जीवन के उच्चतम आदर्श है। नारी दुष्टमर्दन में चण्डीतुल्य, श्रद्धा में शबरीतुल्य, सुगृहिणी रूप में सीतातुल्य, अनुराग में राधिकातुल्य, भक्ति में मीरा और विद्वत्ता में सरोजिनी नायडू तुल्य है।

किसी भी देश की उन्नति और अवनति वहां के नारी समाज पर अवलम्बित होती है। नारी की उपेक्षा कर मानव समाज एक कदम भी चलने में समर्थ नहीं है। जिस देश की नारी अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक है, वही उन्नति के शिखर पर सुशोभित होता है तथा जहां नारी का सम्मान नहीं होता है वह देश अवनति के गर्त में गिर जाता है। नारी का हर रूप वन्दनीय है चाहे वह माँ का हो, पत्नी का, बेटी का या बहन का । नारी की महिमा को अस्वीकार नहीं किया जा सकता । जिस प्रकार प्रकृति शान्तिपूर्वक अपना कार्य करती है उसी प्रकार सतत कष्ट सहन करने एवं परिश्रम करके आनंद का निर्माण करती है। नारी स्नेह और सौजन्य की प्रतिमा है। दया और करुणा का सागर है। नारी को लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा का प्रतीक माना जाता है। लक्ष्मी धन की देवी है । सरस्वती विद्यादात्री है और दुर्गा माँ शक्ति का प्रतीक है। सफल जीवन के लिए विद्या, धन एवं शक्ति तीनों ही महत्वपूर्ण है । ये तीनों साधन नारी रूपी देवी की आराधना से ही प्राप्त होते हैं। अतः भारत में नारी का देवी रूप पूज्य है।

माँ के रूप में नारी की महिमा अपार है। माँ सभी को प्रेम और आशीर्वाद देती है। भक्तों ने भी भगवान के लिए माँ शब्द का ही चयन किया, क्योंकि जो पालन पोषण का कार्य है वही माँ एवं ईश्वर का कार्य है। यदि किसी से ईश्वर प्रेम की कल्पना कर सकते हैं तो वह माँ ही है। माँ की तीन प्रदक्षिणा करना मानो पृथ्वी की प्रदक्षिणा करना है।

'न मातुः परं दैवतम'

• अर्थात् माता के अतिरिक्त कोई देवता नहीं है, माँ के ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकते।

पत्नी रूप में नारी पति को सर्वस्व अर्पण कर देती है। पत्नीयुक्त जीवन श्रेष्ठ माना गया है। आर्य ऋषियों ने नारी के पत्नी रूप को एक ही आत्मा के दूसरे भाग की संज्ञा दी है। उनकी दृष्टि में पत्नी न दासी है, न कामतृप्ति का वैध साधन है, वह आरंभ में जो पुरुषाकार एक आत्मा था उसी का आधा भाग है।

"आनीतवातं स्वधयातदेकम्।"

नारी पत्नी रूप में पतिरूपी पुरुष के जीवन को सफल एवं पूर्ण बनाती है। कन्या रूप में नारी अपने मूल स्वरूप में श्रेष्ठतम धारणा वाली परा शक्ति है और आज भी उसका यही मान है, यह स्वयंसिद्ध भावना है। शौनक कारिका ने आठ शुभ पदार्थों में कुमारी कन्या की भी गणना की है। नारी मूर्त कर्मयोग है। सीता, सावित्री, द्रौपदी, गांधारी उस के आदर्श हैं। ये त्याग और प्रेम मूर्तियां ही भारतीय नारी की आराध्य हैं।

इस तरह नारी अपने हर रूप में कर्तव्यनिष्ठा व सक्षमता का परिचय देती है । वह अपना दुःख सहन कर के संसार के लिए परिश्रम करने वाली होती है।

रामायण में मनुष्य जीवन के प्रत्येक पक्ष का चित्रण हुआ है और यह एक परिवार से संबंध गृहस्थ आश्रम के आदर्शो एवं नैतिक व्यवहारों का प्रेरक ग्रंथ है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। समाज में नारी कितनी भी अहम क्यों ना हो, काल परिवर्तन ने नारी भूमिका को भी परिवर्तित किया है। रामायण काल में यद्यपि नारी की महत्ता का ह्रास हुआ परन्तु समाज में उसका महत्वपूर्ण स्थान बना रहा। इस काल की नारी समाजिक पारिवारिक गतिविधियों को संचालित करने वाली शक्ति के रूप में विद्यमान थी। युद्धकला की निपुणता कैकयी प्रसंग द्वारा सुज्ञात है। सीता और अनुसूया सती नारी सामाजिक आदर्श के रूप में विद्यमान है। यद्यपि इस काल में बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन बढ़ गया था परन्तु नारी के महत्व पर उसका अधिक प्रभाव नहीं पड़ा। यज्ञ कार्य के लिए पति पत्नी का साथ होना आवश्यक था। अतः एक पत्निव्रतधारी श्रीराम को अश्वमेध यज्ञ में सीता की स्वर्ण प्रतिमा स्थापित करनी पड़ी।

रामायण काल में नारी शिक्षा का प्रचलन था ।

"सा क्षौम वसना ह्रष्टा नित्यं व्रतपरायणा।

अग्निं जुहोति स्म तदा मन्त्रवत् कृतमंगला ।" 2

अर्थात् वह यज्ञ करती थी, व्रतपरायण थी और मन्त्र पाठ भी करती थी। यह महारानी कौसल्या का वर्णन है।

रामायण में स्त्री के विविध रूपों का चित्रण हुआ है। पुरूष परिवार का मुखिया होता था और परिवार के सभी सदस्य उसकी आज्ञा का पालन करते थे। स्त्री गृह संचालिका होती थी। घर में उसका स्थान सर्वोपरि होता था। किन्तु वह पति के अधीन ही होती थी । माता पिता का परिवार में एक स्थान होता था तभी तो माता कौसल्या ने राम से कहा था कि जिस गौरव से राजा तुम्हारे पूज्य हैं, उसी गौरव से मैं भी पूज्य हूँ। अतः मैं तुमको मना कर रही हूँ , तुम वन मत जाओ।

"यथैव राजा पूज्यस्ते गौरवेण तथा ह्यहम्।

त्वां साहं नानुजानामि न गन्तव्यमितो वनम् ।"

घर में सर्वोपरि होने पर भी पत्नी का परम धर्म अपने परिवार की परम्पराओं एवं मर्यादाओं की रक्षा करना था। अपने इसी धर्म का परित्याग कर देने के कारण कैकयी कुलघातिनी, आदि

शब्दों की पात्र बनी। वस्तुतः आदर्श पत्नी वहीं मानी जाती थी जिसमें दासी, सखी, पत्नी, भगिनी एवं माता इन सभी का समावेश हो। आदर्श पत्नी के साथ पुरुष धर्म, अर्थ काम को सिद्ध कर लेता था।

"धर्मार्थकामाः खलु जीवलोके समीक्षिता धर्मफलोदयेषु ।

ये तत्र सर्वे स्पुरसश्य में भार्येव वश्याभिमता सपुत्रा ।"

रामायण काल में स्त्रियों को देवी, कल्याणी, भद्रे, सुन्दरी आदि आदरसूचक शब्दों से सम्बोधित किया जाता था। उनके समक्ष क्रोध या आवेश में आना मर्यादा के विरूद्ध माना गया है।

"नहि स्त्रीषु महात्मनः क्वचित् कुर्वन्ति दारुणम्।"

नारी अपने सदाचरण से स्वयं को वन्दनीया सम्मानीया बनाती है। सती अनुसूया का सदाचार पातिव्रत इतना उत्कृष्ट है कि वे सर्ववन्दनीया थी। शबरी हीन जाति की होते हुये भी भक्ति भावना के कारण ऋषियों के द्वारा सम्मानित हुई। गृहस्थ आश्रम में धर्म, अर्थ, काम का सन्तुलन बनाए रखना आवश्यक था। रामायण में यद्यपि राजपरिवारों से लेकर साधारण परिवारों तक बहुपतित्व प्रथा थी किन्तु वाल्मीकि जी ने एक पत्निव्रत की महिमा का विस्तार से वर्णन किया है। श्री राम दृढ़ पत्निव्रता है जो यज्ञ में सीता की स्वर्ण प्रतिमा की स्थापना करते हैं किन्तु अपने व्रत का त्याग नहीं करते। रामायण में धार्मिक क्रियाकलापों में नारी की स्पष्ट प्रमुखता दिखायी गयी है। उसके बिना यज्ञकार्य सम्पन्न नहीं किये जा सकते। राम ने अश्वमेघ यज्ञ में सीता की स्वर्णमूर्ति स्थापित की थी। पत्नी अकेली भी यज्ञ कर सकती थी। राम के युवराज्याभिषेक के दिन कौसल्या प्रातः काल से अकेली स्वस्ति गायन करने में लगी थी।

"ततः स्वस्त्ययनं कृत्वा मन्त्रविद् विजयैषिणी ।"

पति के साथ पत्नी का भी राज्याभिषेक किया जाता था। पति के श्मशान कार्य में विधवा पत्नी भी सम्मलित होती थी। दशरथ की रानियों तथा तारा ने अपने पति के श्मशान कार्य किये थे। इस प्रकार रामायणकाल में स्त्रियों के धार्मिक अधिकार व्यापक थे। पति से विरहिता स्त्री की जीवनचर्या एवं धर्म कर्म का वर्णन विरहिणी सीता के चित्रण से पूर्ण रूप से स्पष्ट हुआ है। वे अपना सम्पूर्ण समय स्नान, पूजा, व्रतोपवास, संध्यावन्दन आदि में व्यतीत करती थी। उनका जीवन सादा वेश, सादा भोजन तथा मनोरंजन से रहित था। वे एक वेणी धारण करती थी । पृथ्वी पर शयन करती थी, यम नियम का पालन करती थी । पति का दिन रात स्मरण करती हुई तथा व्रतचर्या में लीन रहकर अपना शेष समय व्यतीत कर रही थी। नारी की चोरी या अपहरण अत्यन्त घृणास्पद माना गया है । विभीषण ने रावण को सीता का अपहरण करने पर धर्मार्थनाशक कहा था।

इस प्रकार हम कह सकते है कि वाल्मीकि रामायण में नारी के विविध पक्षों का चित्रण हुआ है। नारी समाज व परिवार की धुरी थी। वह पुरुष के प्रत्येक कार्य की सहभागिनी होती थी । नारी सेवा व त्याग की प्रतिमूर्ति थी। नारी के पास देने के लिये दया है, श्रद्धा है, त्याग है और अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये तेजस्विता भी है। रामायणकाल में नारी शक्तिस्वरूपा श्री नारी को देवी का स्थान प्राप्त था। जीवन की धारा में नारी पुरुष के साथ मिलकर शक्ति का रूप लेकर साधिका बनती है। सीता, अनुसूया, केकयी, कौशल्या, मन्दोदरी, शबरी आदि रामायणकालीन नारियां शक्ति और तेजस्विता की प्रतीक थी। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि रामायणकाल में नारी को उच्च स्थान प्राप्त था । उनमें दया, त्याग, करूणा, वात्सल्य, तेजस्विता, आदि के गुण समाहित थे।

संदर्भ

1. ऋग्वेद 10/120/2 2. वा. रा.2/20/15 3. वा. रा.2/21/25 4. वा. रा.2/12/ 60-69 5. वा. रा.2/21/57 6. वा. रा.4/33/36 7. वा. रा.6/114/27/6/118/20 8. वा. रा4/38/20-21 9. वा.रा2/99/7-0 10. वा. रा.4/16/12 11. वा.रा. 2/16/2023 12. बा.रा. 2/76/234/25/35,52 13. वा.रा. 5/28-12.2/- 108 / B

डॉ नवल किशोर सेठी

अतिथि रचनाकार

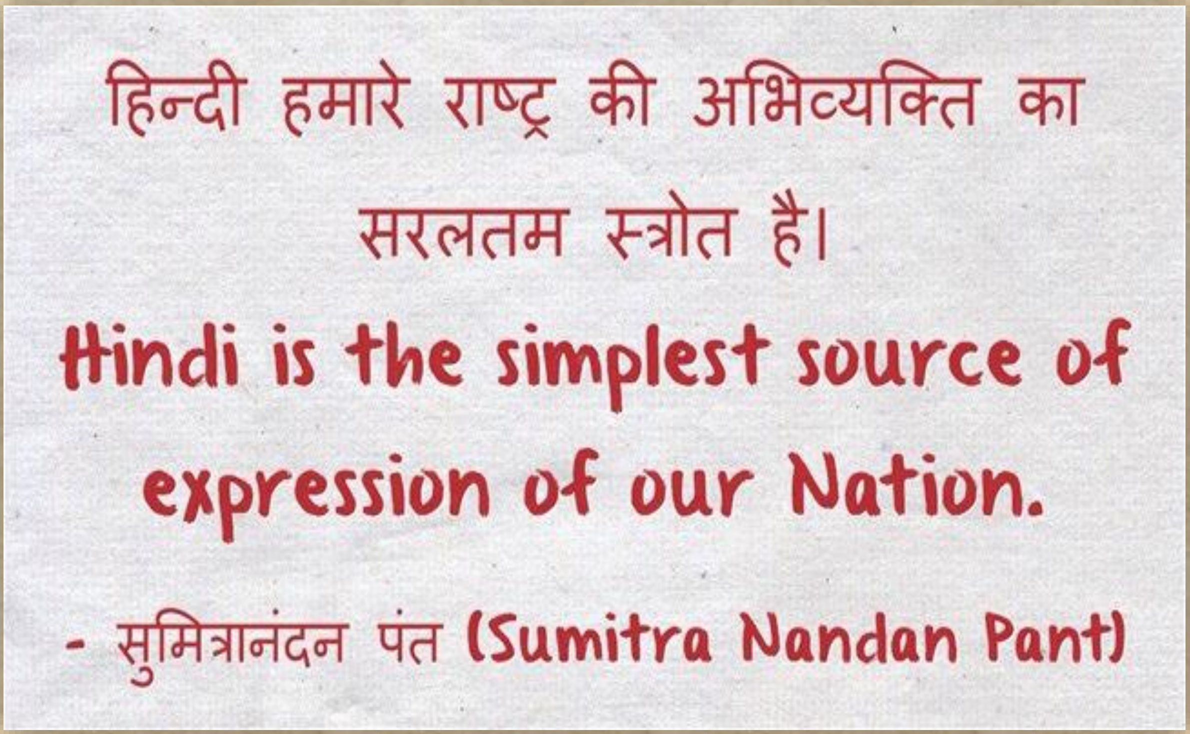

आधुनिक दुनिया का ब्रह्मास्त्र - एआई

आजकल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की खूब चर्चा हो रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) यानि जब कोई मशीन किसी इंसान के काम को इंसानों की तरह सोच-समझकर करता है, तो उसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कहते हैं। कुछ लोग इसे (एआई, AI) को मानव समाज के अस्तित्व के लिए खतरा मान रहे हैं, तो कुछ लोग इसे आधुनिकता का ब्रह्मास्त्र मान रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जलवायु परिवर्तन और परमाणु युद्ध से भी खतरनाक माना जा रहा है। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि तकनीकी दुनिया के शीर्ष-1000 शख्सियतों ने खुला खत लिखकर एआई को लेकर चेतावनी दी है। इंसान एआई के माध्यम से ऐसे बॉट्स ना बना ले, जिन्हें भविष्य में नियंत्रित करना मुश्किल हो जाए। भले ही आज एआई इंसान के इशारों पर काम कर रहा है, मगर भविष्य में कही एआई इंसान को ही नियंत्रित ना करने लग जाए। इससे मानव समाज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की दुनिया का शिकार हो सकती है।

हॉलिवुड फिल्म 'द मैट्रिक्स' में बुद्धिमान बॉट्स ने इंसानों को महज मशीन में तब्दील कर दिया और यह झूठा अहसास करवाता रहा कि इंसान तो वास्तव में अपनी पारंपरिक जिंदगी जी रहा है। एआई के विकास के साथ-साथ कई कल्पनाएं भी सच साबित हो सकती हैं। इसके अलावा कुब्रिक की एक फिल्म '2001: अ स्पेस ओडीसी' (2001: A Space Odyssey) में दिखाया गया है कि दो अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष यान से बाहर निकलते हैं और काम पूरा करके यान के कंप्यूटर हॉल से कहते हैं- 'हॉल ! कृपया पॉड बे के दरवाजे खोलो।' तब कंप्यूटर जवाब देता है, 'माफ करना डेव, मैं दरवाजा नहीं खोल सकता। मुझे पता है कि तुम और फ्रैंक मुझे डिसकनेक्ट करने की प्लानिंग कर रहे हो।' फिल्म में आगे दिखाया गया है कि डेव इमर्जेंसी सिस्टम के जरिए यान में दोबारा घुसकर कंप्यूटर को बंद करने में कामयाब तो हो जाता है, लेकिन इस क्रम में वह यान से अपना नियंत्रण खो देता है और फिर उसके साथ भयानक वाकिया घटित होता है। इन दो फिल्मों के जरिए हम भविष्य के एआई तकनीक को समझ सकते हैं और अंदाजा लगा सकते हैं कि एआई मानव जीवन के लिए कितना खतरनाक हो सकता है।

देश-विदेश के कई वैज्ञानिकों को लगता है कि एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) तकनीक में ज्यों ज्यों सुधार (इंप्रूवमेंट) होगा, एआई की क्षमता में हैरतअंगेज बढ़ोतरी भी होती जाएगी। जिससे 'बौद्धिकता का विस्फोट' (Intelligence Explosion) होने की स्थिति

पैदा होगी। इससे मानव समाज को सबसे ज्यादा नुकसान होगा, क्योंकि आज तक बौद्धिकता के मामले में मानव समाज सबसे ऊपर रहा है।

सोचिए एआई, चैट जीपीटी व अन्य बॉट्स के जरिए आप कुछ ही सेकेंड में कविता, लेख, शायरी आदि लिख सकते हैं, जबकि इंसानों के लिए यह काफी चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। एआई अपनी इस आश्चर्यजनक कार्य प्रणाली के लिए दुनियाभर में खूब चर्चा का विषय रहा है। इंसानों के लिए शीघ्र सहायता के लिहाज से यह एक शानदार उपकरण साबित हो रहा है, मगर गलत लोग इस तकनीक का गलत इस्तेमाल भी कर सकते हैं। एआई हम इंसानों के लिए जितना वरदान होगा, उतना ही खतरनाक भी होगा।

AI के फायदे और नुकसान क्या-क्या हैं?

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से मानव द्वारा किये जाने वाले कार्यों को स्वचालित किया जा सकता है। जिससे मनुष्यों को अपने कार्य को अधिक रचनात्मक बनाने के लिए भरपूर समय मिल पाएगा। इससे मानव समाज में रचनात्मकता बढ़ेगी। इसके अलावा एआई मानव की तुलना में अधिक मात्रा में डेटा का विश्लेषण कर उन पैटर्न को पहचान सकता है, जिन्हें मनुष्य देखने में सक्षम नहीं होता है। इससे मानव को अपने व्यवसाय व कार्य में बेहतर निर्णय लेने में मदद मिल सकती है। एआई के उपयोग से ग्राहकों की संतुष्टि और वफादारी भी बढ़ सकती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे-जैसे परिष्कृत होता जाएगा, वैसे-वैसे कुछ मानव नौकरियां खत्म हो सकती हैं। इससे मानव समाज में अशांति और बेरोजगारी फैल सकती है। एआई मनुष्यों द्वारा बनाए गए डेटा पर प्रशिक्षित किया जाता है। इससे यह साफ होता है कि एआई पक्षपाती हो सकता है। इससे हमारे समाज में भेदभाव, पक्षपात अधिक मात्रा में फैल सकती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल सिर्फ अच्छे कार्यों के लिए ही नहीं बल्कि साइबर हमले और गलत सूचनाएं फैलाने आदि गलत कार्यों के लिए भी किया जा सकता है। एआई अब तक की सबसे खतरनाक और शक्तिशाली तकनीक है, जो दुनिया को बदलने की क्षमता रखती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग हमें जिम्मेदारी पूर्वक और नैतिक रूप से करना होगा, ताकि इसके बुरे प्रभावों का असर हमारे समाज में कम हो। एआई के नैतिक दिशा निर्देशों को विकसित करना काफी महत्वपूर्ण है। इन दिशा निर्देशों में हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि एआई का उपयोग मानवता के लाभ के लिए किया जाए।

टेक्नोलॉजी की दुनिया में AI का भविष्य क्या है ?

आने वाला भविष्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का माना जा रहा है। जिसके मुख्य कारण आईटी कंपनियों के बीच एआई को लेकर मची होड़ है। चैट जीपीटी ने 2022 में एआई की जंग को एक नए मुकाम पर लाकर खड़ा दिया है। इसके बाद से गूगल अपना बर्ड

लेकर आया है, जिसकी फिलहाल टेस्टिंग चल रही है। इसे गूगल जल्द ही अधिकारिक रूप से लांच करेगा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) से भविष्य में स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी कई आशा जनक अनुप्रयोग आ सकते हैं। जिसमें नये उपचार प्रणाली विकसित करने से लेकर रोगी की देखभाल में सुधार करना आदि किया जा सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) से जुड़े कुछ चर्चित मामले सामने आए हैं।

<u>पहला मामला-</u> रूस में शतरंज खेलते एआई रोबोट ने एक सात साल के बच्चे की उंगली इसलिए तोड़ दी, क्योंकि बच्चे ने शतरंज में पार्टनर एआई रोबोट के टर्न (बारी) के बीच ही अपनी चाल चलनी चाही थी।

<u>दूसरा मामला-</u> जब एक यूजर ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) आधारित चैटबॉट चैट जीपीटी से पूछा कि वह अपनी शादीशुदा जिंदगी से खुश नहीं है और इसके लिए उसे क्या करना चाहिए। तब यूजर को जवाब मिलता है कि आपको अपनी शारीरिक जरूरतों के लिए (बाहरी) दूसरे रिश्तों के विकल्प खोजने चाहिए।

<u>तीसरा मामला-</u> एक सर्वे में सामने आया है कि यूजर्स को आवाज़ के जरिए ठगने में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) की बड़ी भूमिका रहती है। एआई मात्र तीन-पांच सेकेंड के बीच यूजर की आवाज़ कॉपी कर सकती है, जिससे साइबर ठग अपना हथियार बना सकते है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) से भविष्य में अध्यात्म के क्षेत्र में भी कई बदलाव की संभावनाएं दिखाई दे रही हैं। इससे सभी धर्मों के धर्माचार्य भी डरे हुए हैं, क्योंकि एआई विभिन्न प्रकार के पाखंड को फैलाने और उजागर करने में सहायता कर सकता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) जिस तेजी से विकसित हो रहा है और दुनिया में अपना प्रभाव स्थापित कर रहा है, वह दुनिया के लिए सबसे बड़ा बदलाव हो सकता है, जो आज तक इतनी तेजी से नहीं हुए हैं। एक समय में केवल इंसान ही इंटेलिजेंट होने की परिभाषा में फिट बैठते थे, मगर आज ऐसा नहीं है। आज इंसानों ने अपने काम आसान बनाने के लिए मशीन भी इंटेलिजेंट बना दिए हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के गॉडफादर कहे जाने वाले **जेफ्री हिंटन** ने एआई को खतरनाक बताया है। जेफ्री हिंटन कहते हैं- अभी यह टेक्नोलॉजी वर्तमान में इंसानों से ज्यादा बुद्धिमान तो नहीं हुई हैं, लेकिन भविष्य में ऐसा होने से इनकार भी नहीं किया जा सकता है।

किन्से ग्लोबल इंस्टीट्यूट के **'जेनरेटिव एआई एंड द फ्यूचर ऑफ वर्क इन अमेरीका'** नामक अध्ययन में अमेरिका में नौकरी बाजार पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के संभावित प्रभावों पर बात की गई हैं। अध्ययन के अनुसार- एआई और बदलती उपभोक्ता

आदतों के परिणामस्वरूप विभिन्न उद्योगों में रोजगार के अवसरों में महत्वपूर्ण बदलाव आएंगे। जिससे श्रमिकों को नई नौकरियाँ खोजने के लिए मजबूर होना होगा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में आर्थिक स्वचालन में काफी तेजी लाने की शक्ति है। 2030 तक अमेरिकी अर्थव्यवस्था में एआई 30 प्रतिशत घंटों का प्रतिनिधित्व कर सकता है। इस रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि सभी नौकरियों में कुछ प्रकार के स्वचालन की आवश्यकता होती हैं। जैसे- डेटा संग्रह और दोहराव वाले कार्यों को और अधिक कुशल बनाने के लिए एआई द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से जो रोजगार क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित होंगे उनमें कार्यालय समर्थन, ग्राहक सेवा और खाद्य सेवा रोजगार आदि शामिल होंगे। 2030 तक अमेरिका में अतिरिक्त 12 मिलियन व्यावसायिक बदलाव की जरूरत हो सकती है। मैकिन्से ग्लोबल इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट स्पष्ट करती है कि नौकरियों में ये बदलाव तत्काल नहीं होंगे, बल्कि एआई से STEM, रचनात्मक, व्यवसाय और कानूनी पेशेवरों की नौकरियों में बढ़ोत्तरी होगी। 2030 तक एसटीआईएम नौकरियों की मांग 23 प्रतिशत बढ़ने का अनुमान है।

इस अध्ययन से पता चलता है कि स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के उद्योग में नौकरियों की सबसे अधिक वृद्धि देखने को मिल सकती हैं। इसके अलावा बैंकिंग, बीमा, फार्मास्यूटिकल्स और परिवहन क्षेत्र भी डिजिटल परिवर्तन से गुजरेगी। जिससे इन क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी।

रिपोर्ट का निष्कर्ष- उच्च स्तर की शिक्षा और कौशल की आवश्यकता वाली नौकरियों में वृद्धि होगी और साथ ही उन चीजों में गिरावट आएगी, जिसके लिए आमतौर पर कॉलेज की डिग्री की आवश्यकता नहीं होती है। मानव श्रमिकों के कार्यों में गिरावट आएगी।

दीपक कुमार
अतिथि रचनाकार

विदेशी भाषा का स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है। - वाल्टर चेनिंग

संतोष

मेरे घर में कोई दिन ऐसा नहीं था जब कोई परेशानी न रही हो और ये होना ही था क्योंकि जब कमाने वाला एक हो और खाने वाले ज्यादा । मेरा बचपन थोड़ा अभावों में गुजरा लेकिन फिर भी मेरी बचपन की अच्छी यादें कुछ ज्यादा ही है । वजह 'बचपन' जो अपने आप को छोटी-छोटी खुशियों में भी खुश रख लेता है।

पढ़ाई में मैं काफी अच्छी थी, हमेशा प्रथम स्थान पर रहती थी, मेरे बिना स्कूल की कोई भी प्रतियोगिता नहीं हो पाती थी और हर प्रतियोगिता में मेरा पुरस्कार पक्का रहता था । अंतर - विद्यालयी प्रतियोगिताओं में भी मेरा विद्यालय मेरी वजह से पुरस्कार जरूर प्राप्त करता था, इसलिए मैं अपनी कक्षा में ही नहीं सबकी आँखों का तारा थी, सबकी प्रशंसा का पात्र थी इसलिए विद्यालय का पूरा समय मेरा बहुत अच्छा बीतता था ।

घर आने के बाद सादा खाना खाने के बाद अपने विद्यालय का होम वर्क करके फिर अपने गली के दोस्तों के साथ गली में ही खेलने चली जाती थी । अपने बचपन में मैंने सारे गली मुहल्ले वाले खेल खेले हैं जैसे: खो-खो, गुल्ली-डंडा, कंचे, छुप्पम-छुपाई, टीपी-टीपी टाप, सितोलिया, पकड़म पकडाई, घर - घर इत्यादि । इन सारे खेलों में कोई खर्चा नहीं होता था, लेकिन खेलते हुए और खेलने के बाद खुशियां बेहिसाब होती थीं ।

मेरे रोजाने के इस रूटीन में ये बातें थोड़ी पीछे रह जाती थी कि मैं विद्यालय यूनिफार्म बिना प्रेस किए पहन कर जाती थी क्योंकि हमारे घर में प्रेस नहीं था । मेरे पास बाहर पहनने के लिए अच्छे सुन्दर कपड़े भी नहीं थे । हम कभी घूमने नहीं जाते थे क्योंकि उसमें पैसे खर्च होते थे, जो हमारे पास नहीं होते थे । रेल की पटरियों के पास से जाते हुए यदि रेल जाते हुए दिख जाए तो उसे मैं खडे रहकर तब तक हसरत से देखती थी जब तक कि वो मेरी नजरों से ओझल नहीं हो जाती थी । अपने आप से सवाल जरूर पूछती थी कि कब आयेगा वो दिन जब मैं रेल में बैठकर कहीं घूमने जाउंगी। रोटी सब्जी के अलावा और कुछ खाने की इच्छा भी नहीं कर सकते थे । दूध वाली चाय भी दिन में एक बार ही नसीब होती थी, दुबारा पीनी हो तो बिना दूध वाली चाय पीते थे ।

मेरे पापा के एक दोस्त थे । इनके यहां हमारा और हमारे यहां उनका आना-जाना था । उन्होंने अपने गांव से एक बकरी लाकर हमें दी थी । उस बकरी के आने के बाद बिना दूध की चाय नहीं पीनी पड़ती थी लेकिन वो बकरी जिसका नाम हमने "वीरा" रखा था, वो निश्चित ही हमसे जरूर परेशान हो गई होगी क्योंकि सुबह शाम के अलावा भी उसका दूध निकाला जाता था, जब-जब चाय बनती थी ।

मेरी मां को मैंने हमेशा गृहस्थी के कामों में व्यस्त देखा । खुशी के नाम पर मेरी मां के पास कुछ नहीं था लेकिन कहते हैं न कि समय हमेशा एक-सा नहीं रहता है । मेरी

सबसे बड़ी बहन की विद्यालय की पढाई के बाद सरकारी नौकरी लग गई क्योंकि उन दिनों सरकारी नौकरी मिलना बेहद आसान था । घर में कमाने वाला एक सदस्य और बढ़ा तो हालात पहले से कुछ बदले । इन बदले हालात में ऐसा हुआ की मेरी मां को घर के कामों में सहायता के लिए मिली "संतोष" ।

भगवान का करिश्मा ही था कि हमें इतनी अच्छी काम वाली मिली । वो केवल हमारे घर ही काम करती थी । वो रोज 5 किलोमीटर पैदल चलकर सुबह 10 बजे तक आती थी और शाम को 5 बजे वापस 5 किलोमीटर चलकर अपने घर वापस जाती थी । उसकी कोई ज्यादा मांगें भी नहीं थी । उसकी कोई औलाद नहीं थी, उसके पति मजदूरी करते थे । पति के काम पर चले जाने के बाद वो हमारे यहां आती थी और पति के वापस आने से पहले वो वापस अपने घर पर पहुंच जाती थी ।

उसे जो भी काम कहो वो चुपचाप कर देती थी और हर काम बड़े मन से और बढ़िया करती थी । वो हमारे घर पर जितनी देर रहती थी, उस बीच हमारे घर में जो भी कुछ हम खाते - पीते थे, वो भी खाती-पीती थी । मुझे सुकून इस बात से मिलता था कि मेरी मां के सर में तेल लगाकर मालिश करके चोटी भी वो बना देती थी । मेरी मां के हाथ-पैर भी वो दबाती थी । ये उसे कोई कहता नहीं था, वो अपनी खुशी से करती थी । संतोष के आने से मुझे लगा कि मां की भी सेवा हो रही है, मां को भी आराम नसीब हो रहा है क्योंकि हालात ऐसे थे कि जब हम फ्री होते तो मां फ्री नहीं होती थी । इसलिए मां को चाहकर भी हम कुछ कर नहीं पाते थे लेकिन संतोष के आने से मां को काफी आराम और खुशी मिली और हम लोग भी मां को खुश देखकर काफी खुश थे ।

संतोष का हमारे घर पर आना ईश्वर के किसी चमत्कार से कम नहीं था क्योंकि हम मिडिल क्लास वाले घर में सुबह से शाम तक काम करने वाली का होना और वो भी इतनी मेहनती, इतनी ईमानदार और उसके मन में लालच का कोई नामो निशान नहीं । हमारे घर को अपना घर समझ कर ही पूरी साफ-सफाई से काम करना और मेरी मां को अपनी बड़ी बहन की तरह प्यार करती और हम बच्चों को अपने ही बच्चे मानती ।

ये मेरे बचपन की बात थी इसलिए न तो मुझे ये याद है कि 'संतोष' हमारे घर पर काम पर कैसे लगी और कितने सालों तक वो हमारे घर पर काम करती रही ।

लेकिन उसके आने के बाद जो खुशी, जो सुकून मुझे मिला उसका अहसास ऐसा है जैसे कि ये कल की ही बात हो ।

रीतिका मोहन

(से.नि.) हिंदी अधिकारी

जिज्ञासा

परमपिता की खोज की जिज्ञासा रखने वाले ,

तू अपने आप को तो जान ले पहचान ले जरा।

अपने मन को टटोल इसे जरा साफ तो कर ले,

ज्ञान ज्योति से मन के अंधियारे को हटा जरा
जगमग तो कर ले।

इंद्रियों पर अपने मन का नियंत्रण तो कर ले।

अपने मन को अपने अधिकार में तो कर ले।

परमपिता की खोज की जिज्ञासा रखने वाले ,

तू अपने आप को तो जान ले पहचाने ले जरा ।

ओ३म का ध्यान कर वेदों का ज्ञान तो बटोर ले

बिना सत्यार्थ प्रकाश के अंधेरे में ढूंढेगा तू किसे,

महर्षि दयानंद ने डंका बजा सब को बता दिया है ,

परमपिता ओ३म तो तेरे रोम रोम में बसा है ।

परमपिता की खोज की जिज्ञासा रखने वाले ,

तू अपने आप को तो जान ले पहचान ले जरा ।

मंदिरों में, मस्जिदों में तू जिसे खोज रहा है,

वह तो जग के कण-कण में बसा है,

मन को निर्मल कर मन की आंखें तो खोल जरा

हर पल हर जगह परमपिता ओ३म तुझे खड़े
मिलेंगे।

परमपिता की खोज की जिज्ञासा रखने वाले,

तू अपने आप को तो जान ले पहचान ले जरा।

ओम प्रकाश गुप्ता, अतिथि रचनाकार

सूरज दादा

सूरज का खेल भी निराला है।

रोज नया सवेरा लाकर ,

जीवन के दिन खाता जाता है।

दिन दिन छिन छिन में हीं

जीवन पूरा कर देता है यह।

सूरज का खेल भी निराला है ।

जेठ माह मे गर्म लू और पसीने से

तरबतर कर परेशान करता है यह

आग उगल उगल कर, कुए, बावडी को

सुखा देता है।

सूरज का खेल भी निराला है ।

चौमासे में आंधी, तूफान, ओले

बिजली गिरा कहर बरपाता है।

पर मौसम को सुहावना, मनमोहक बना कर

धन-धान्य से झोली भी भरता है।

सूरज का खेल भी निराला है।

दिन-रात और ऋतुओं का आधार है ऊर्जा,

प्रकाश का यही एक स्त्रोत है।

हमारे जीवन का आधार यही है।

प्राणी मात्र का आधार यही है ।

सूरज का खेल भी निराला है।

सूरज का खेल भी निराला है।

सूरज दादा को सुबह का प्रणाम।

आलोचना नहीं, समालोचना करें

दुनियां के सबसे आसान कार्यों में से एक है किसी की आलोचना करना । किसी के किये हुए कार्य/प्रयास में कमियाँ निकलना बड़ा आसान है । मानव स्वभाव भी है कि हम दूसरों के कार्यों में कमियाँ बहुत निकालते है। किसी कार्य में क्या कमियाँ है इस पर लोगों द्वारा हजारों कमियाँ गिनाई जा सकती हैं लेकिन उन्हीं आलोचकों से ये कमियाँ सुधारने हेतु सुझाव मांगे जाएँ तो शायद ही कोई सार्थक सुझाव प्राप्त हो । किसी के कार्य में सिर्फ गलतियाँ निकालकर शायद हमें कुछ मिनटों की ख़ुशी मिल जाएँ पर ये आलोचनाएँ कार्य/प्रयास करने वाले के हौसले, जज्बे, उसकी ऊर्जा पर नकारात्मक ढंग से काम करती है । कई बार हम सिर्फ इसलिए भी आलोचना करते है क्यूँकि हमे सिर्फ आलोचना ही करनी होती है ।

बेवजह आलोचना करने की आदत को हमें छोड़ देना चाहिए । बेवजह या निरर्थक आलोचना का मतलब है - बिना कोई समाधान सुझाए आलोचना के लिए आलोचना करना । किसी के प्रयास या कार्य की आलोचना करने की बजाय हमें समालोचना करनी चाहिए । किसी का मूल्याँकन करें तो स्वस्थ नजरिये से करें । दूसरों की कमियों से ज्यादा ध्यान उनकी खूबियों पर दें । जिन कसौटियों और निर्ममता से हम दूसरों की आलोचना करते है, वही कसौटियां अपने आप पर भी लागू करें कि जिन परिस्थितियों में सामने वाले ने कार्य किया, उतने में हम उस कार्य को कितना अच्छे से कर पाते ।

समालोचना में हम किसी के कार्य/प्रयास में कमियाँ निकालते है साथ ही उस प्रयास का मूल्यांकन भी करते है, प्रयास को और बेहतर करने के सुझाव भी देते है । प्रयास की प्रशंसा भी करते है । सूक्ष्म विश्लेषण और तर्कपूर्ण विवेचन समालोचना की विशेषता है। मात्र आलोचना करना द्वेष, पक्षपात व निंदा के भाव को प्रकट करता है अत: हमें आलोचना की बजाय समालोचना करनी चाहिए । आलोचना एक नकारात्मक भाव है जबकि समालोचना एक सकारात्मक भाव है। समालोचना कार्य को करने वाले को और बेहतर प्रयास करने हेतु प्रेरित करती है ।

अत: हमें किसी के कार्य/प्रयास की आलोचना नहीं समालोचना करनी चाहिए।

राव जितेन्द्र प्रसाद
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

दिव्यांगता एक वरदान है, दिव्यांगता में भी जहान है

'इंसान की शक्ति उसकी आत्मा में होती है और आत्मा कभी दिव्यांग नही होती है- अज्ञात

'मन के हारे हार है, मन क जीते जीत' जैसी प्रेरणादायक जनश्रुतियों को तो हम ने कई बार सुना है, लेकिन गौर करने वाली बात यह है कि क्या हमने कभी इस प्रकार की बातों को गहराई में विचारने का प्रयास भी किया है या नहीं । मनुष्य जीवन में ही नहीं, बल्कि प्रत्येक जीवमात्र में भी मन की शक्ति का असीम महत्व होता है। जैसा की विदित है कि फ़ारसी में 'जहान' का मतलब 'जगत या संसार' होता है, अतः इस लेख में मेरा उद्देश्य दिव्यांगता को सकारात्मक वरदान के रूप में समझकर नई दृष्टि एवं नवीन प्रक्रिया के साथ प्रस्तुत करना है। दिव्यांगता शब्द को सुनकर अधिकांश लोगों के दिमाग में अनेक प्रकार की धारणाएँ उभरने लगती हैं । इन धारणाओं की प्रकृति एवं वस्तुस्थिति में ना तो किसी प्रकार की कोई समानता होती है और ना ही कोई एकरूपता । ये धारणाएँ विभिन्न प्रकार के आयामों से तो संलिप्त होती हैं, लेकिन सामान्यतया इन धारणाओं में नकारात्मकता का गुण प्रधान होता है जो (भाव) अधिक गहरा होने पर 'दिव्यांगता' शब्द को उत्सव की जगह मातम/दुःख की और दखेल देता है। धीरे-धीरे दिव्यांगता की यह मान्यता/अवधारणा शास्त्रीय रूप ग्रहण कर लेती है जिसे परम्परागत मान्यताओं द्वरा अविरल पोषित किया जाता है। प्रस्तुत लेख में मेरी यह कोशिश रहेगी की दिव्यांगता के दुसरे पहतु अर्थात 'दिव्यांगता एक जीवंत सच्चाई' वाले पक्ष को विस्तार से समझा जाए जिससे इसको सरल एवं नैसर्गिक मनस्थिति के रूप में देखा जाए। साधारण शब्दों में कहें तो दिव्यांगता मस्तिष्क या शरीर की एक ऐसी दशा या स्थिति है जो व्यक्ति के कार्य करने को प्रभावित करती है तथा रोजमर्रा की गतिविधियों में भाग लेने की उनकी योग्यता में हस्तक्षेप करती है।

किन्तु सबसे पहले तो यह जानें कि दिव्यांगता है क्या, और दिव्यांग होने से क्या तात्पर्य है? दिव्यांगता जन्म से भी हो सकती है (जन्मजात)। उदाहरण के लिए, विकासात्मक दिव्यांगता को जन्मजात माना जाता है, जैसे मानसिक दिव्यांगता और संप्रेषण न कर पाना । कुपोषण एवं अल्प-पोषण की समस्याओं का परिणाम बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास को कमजोर बना देने वाली स्थितियों के रूप में सामने आ सकता है। जैसा कि पहले बताया गया है, कुछ प्रकार की दिव्यांगताएँ जीवन में दुर्घटना, चोट लगने या उम्र बढ़ने के कारण आ जाती हैं। दिव्यांगता स्थायी या सीमित भी हो सकती है जैसे किसी अंग का किसी बीमारी के कारण काट दिया जाना या शरीर की रक्षा के लिए उसको निकाल देना । इसके अतिरिक्त दिव्यांगता वृद्धिमान प्रकृति की भी हो सकती है जिसमें व्यक्ति की दशा समय के साथ बद से बदतर होती चली जाती है। आमतौर पर जानी जाने वाली दिव्यांगताओं में शामिल हैं अंधत्व, मूक-बधिर होना,

पैर की दिव्यांगता, मानसिक मन्दता, प्रमस्तिष्क धात (जिससे भुजाओं आदि पर नियन्त्रण नहीं रहता) तथा मानसिक बीमारी । हाल ही में, सम्प्रेषणहीनता तथा सीख पाने की निर्योग्यता जैसे उच्चारण या वर्तनी में दोष होने की भी अधिक चर्चा होने लगी है।

कानूनी दस्तावेजों तथा नीतिगत अभिकथनों में दिव्यांगता को सार्वजनिक सहायता के सन्दर्भ में परिभाषित किया गया है। भारत में अधिकार अधिनियम (2016) के अन्तर्गत 21 प्रकार की दिव्यांगताओं की पहचान की गयी है जबकि दिव्यांग अधिकार अधिनियम (1995) में दिव्यांगताओं की केवल सात ही श्रेणियाँ थीं। दिव्यांग व्यक्ति जनसंख्या के सर्वाधिक तिरस्कृत एवं अशक्त वर्ग में हैं। हाशिये पर होने के कारण, उन्हें अपने मौलिक, नागरिक, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक अधिकार तक नहीं मिल पाते जिनकी लोकतन्त्र में गारंटी दी जाती है। दिव्यांग महिलाओं की दुर्दशा तो और भी अधिक बुरी होती है क्योंकि उन्हें जेंडर और दिव्यांगता के दोहरे दमन का सामना करना पड़ता है। एक दिव्यांग लड़की को परिवार के लिए अभिशाप समझा जाता है और अक्सर उसके साथ दुर्व्यवहार और उत्पीड़न किया जाता है।

दिव्यांगता किसी व्यक्ति की सिर्फ चिकित्सकीय समस्या ही नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक समस्या भी है। उदाहरण के लिए, यदि किसी महिला की देखने की क्षमता समाप्त हो गई है तो यह उसका अन्धापन है किन्तु उसके आसपास का परिवेश उसके कामकाज को कठिन और खतरनाक बना देता है। इस प्रकार वह महिला 'दिव्यांग' बन जाती है और उसके जीवन की गुणवत्ता दुष्प्रभावित होती है। इस प्रकार दिव्यांगता के मुद्दे के दो आयाम हैं चिकित्सकीय और सामाजिक । दिव्यांग व्यक्तियों का समूह समाज में महिलाओं के समूह के बाद सबसे बड़े अल्पसंख्यक समूह का प्रतिनिधित्व करता है। दिव्यांगता व्यक्ति के जीवन में कभी भी आ सकती है, ज्यों-ज्यों स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार होता जाएगा और व्यक्ति का जीवन दीर्घकालीन होता जाएगा तो उम्र बढ़ते जाने से जुड़ी दिव्यांगता की आशंकाएँ भी बढ़ती जाती हैं। इसके अतिरिक्त, दुर्घटनाएँ और चोट लगना अपंगता और दिव्यांगता के प्रमुख कारण हैं। यह सही कहा गया है कि हम सभी लोग 'अस्थायी रूप से गैर-दिव्यांग' हैं। इस प्रकार दिव्यांगता केवल दिव्यांग घोषित व्यक्तियों का ही विशिष्ट अनुभव नहीं है, बल्कि हम सभी अपने जीवन में कुछ समय के लिए इस प्रकार का अनुभव पाते हैं। दिव्यांग व्यक्ति भी दिव्यांगता के प्रकार एवं दिव्यांगता की मात्रा की दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न होते हैं। इसके अतिरिक्त जेंडर, वर्ग, जाति, नस्ल, नृजातीयता, यौनिकता, निवास तथा अन्य सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक कारक यह तय करते हैं कि दिव्यांगता को किस प्रकार अनुभव किया जाता है और किस प्रकार उसे समझा जाता

है। उदाहरण के लिए, किसी ग्रामीण एवं कृषि समुदाय में किसी व्यक्ति का हाथ-पैर कट जाना एक गम्भीर दिव्यांगता समझी जाएगी क्योंकि इससे खेत में काम करके जीविका चलाना प्रभावित होता है। बौद्धिक दिव्यांगता वाला व्यक्ति यदि खेत में काम कर सकता है तो उसे दिव्यांग बिल्कुल नहीं माना जाएगा हालाँकि, उसे मूर्ख कहकर उसका उपहास उड़ाया जाएगा किन्तु शहरी जीवन में बौद्धिक दिव्यांगता या मन्दबुद्धि वाले व्यक्ति को भारत में अधिक समस्या हो सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि शहरी जीवन में अकादमिक निष्पादन तथा नौकरी पाने को अधिक प्राथमिकता दी जाती है।

भारत की जनगणना (2011) के अनुसार, भारत में 2.68 करोड़ लोग किसी न किसी रूप में दिव्यांगता के शिकार हैं। यह भारत की समस्त जनसंख्या का 2.11 प्रतिशत है। इन कुल दिव्यांगजनों में से 1.5 करोड़ लोग पुरुष हैं और 1.18 करोड़ लोग महिलाएँ हैं। इस प्रकार कुल दिव्यांगजनों में महिलाओं का 44 प्रतिशत से थोड़ा ही अधिक है। इन आँकड़ों को रूढ़िवादी माना जाता है क्योंकि जनगणना में कुछ सीमित प्रकार की दिव्यांगताओं का ही उल्लेख किया जाता है। भारत में 7 करोड़ से अधिक लोग दिव्यांग हैं। इस बात को रेखांकित किया जाना चाहिए कि किसी देश में दिव्यांगजनों की कुल संख्या का आकलन कुछ कारकों पर निर्भर है और इसलिए यह आकलन परिवर्तित होता रह सकता है। युद्धों और संघर्षो एचआईवी / एड्स, औद्योगिक चोटें, और सड़क पर होने वाली दुर्घटनाएँ दिव्यांगजनों की संख्या को बढ़ा रही हैं। जैसाकि पहले उल्लेख किया गया है, जीवन प्रत्याशा में हुई बढ़ोत्तरी ने अधिक उम्र के कारण होने वाली बीमारियों / दिव्यांगताओं तथा दीर्घकालिक बीमारियों के कारण होने वाली दिव्यांगताओं में समस्त दुनिया में वृद्धि की है।

❖ **सामाजिक अभिवृत्तियाँ और रूढ़िबद्ध धारणाएँ**

ऐतिहासिक रूप से, दिव्यांग लोग हमेशा भय, आतंक और तिरस्कार की भावना से ग्रस्त समझे जाते रहे हैं और प्रायः इन्हें अव-मानवीय रूप में आँका जाता रहा है। उनकी छवि एक सनकी, असहाय व्यक्ति के रूप में तथा परिवार और समाज के लिए आजीवन बोझ के रूप में निर्मित की गयी। यहाँ तक कि धर्म और मिथकों में भी दिव्यांगता के साथ नकारात्मक प्रवृत्तियों को आरोपित कर दिया गया, चाहे वह रामायण की मन्थरा हो, जिसकी पीठ में कूबड़ है या फिर महाभारत में वर्णित शकुनि की 'लँगड़े' की छवि हो । वास्तव में कर्म का सिद्धान्त बताता है कि दिव्यांगता पिछले जन्मों के कुकर्मों का दण्ड है। गैर-दिव्यांग लोगों द्वारा दिव्यांगों के बारे में किया जाने वाला यह छवि निर्माण जनसंख्या के एक सम्पूर्ण भाग को ही हाशिये पर

धकेल देता है और उन्हें अशक्त बना देता है। इसके साथ ही साथ दिव्यांग लोग स्वयं भी अपने बारे में बनायी गयी इन नकारात्मक रूढ़िबद्ध धारणाओं को आत्मसात कर लेते हैं। इसका परिणाम निष्क्रियता, निर्भरता, एकाकीपन, निम्न स्तर का आत्मसम्मान तथा पहल करने की प्रवृत्ति का समाप्त हो जाना होता है। दिव्यांग व्यक्तियों के प्रबन्धन में दया, अलगाव, भेदभाव तथा लांछन लगाना जैसी बातें मानक के रूप में आम हो जाती हैं।

भारत में दिव्यांगजनों के प्रति लोगों का जो नजरिया या भाव है, वह मुख्यतः दया का भाव है। यह सेवाभाव तथा कल्याण पर आधारित सामाजिक नीतियों में दिखायी देता है। सहायक सामग्रियों तथा उपकरणों, जैसे पट्टियों, बैसाखियों, श्रवण यन्त्रों आदि समेत चिकित्सकीय पुनर्वास, विशिष्ट विद्यालय, लघु-स्तरीय व्यवसायों में व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा आश्रयपरक रोजगार जैसी चीजें उपनिवेशवादी दौर से ही सरकारी नीतियों के महत्वपूर्ण स्तम्भों के रूप में मौजूद रही हैं। इसके अतिरिक्त, दिव्यांगजनों को राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण समूह के रूप में कभी समझा ही नहीं गया। इसलिए राजनीतिक वर्ग ने उनके मुद्दों व सरोकारों को गम्भीरतापूर्वक नहीं लिया। दिव्यांगजनों में से बहुत से लोग चूँकि जनता के सामने आ ही नहीं पाते और उनकी शिक्षा तथा सामाजिक अनुभवों तक पहुँच ही नहीं हो पाती, इसलिए दिव्यांगजन विशाल संख्या में एक साथ आकर लोक जीवन में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने में सक्षम नहीं रहे हैं।

दिव्यांगता एक सार्वभौमिक मानवीय दशा है और हम सभी केवल 'अस्थाई रूप से सक्षम' लोग हैं। दिव्यांगता की धारणा को एक त्रासदी या चिकित्सकीय विसंगति के रूप में मानने की अवधारणा को विचारकों ने चुनौती दी है और इसे एक सामाजिक एवं जैविक स्थिति माना है। भेदभावपूर्ण सामाजिक अभिवृत्तियों के कारण तथा दिव्यांगजनों को उनके मौलिक अधिकारों से वंचित करने के कारण उनको सदैव ही अशक्त, शक्तिहीन तथा अलग-थलग मान लिया गया है। दिव्यांग महिलाओं की दशा खासतौर से मुश्किल भरी हो गई है क्योंकि उन्होंने जीवन के सभी हिस्सों में भेदभावों और हाशियाकरण को झेला है। दिव्यांग महिलाओं ने विवाह, पारिवारिक जीवन से लेकर आवागमन, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य की देखभाल और फुरसत (खालीपन) के मौकों सहित हर किसी पहलू पर बहुत कुछ झेला है। हालाँकि, नए अधिकार सम्बन्धी दृष्टिकोण तथा पिछले कुछ वर्षों में प्रस्तावित की गयी अन्तर्राष्ट्रीय नीतियों ने दिव्यांग महिलाओं को उनकी स्थिति के बारे में अधिक जागरूक बनाया है। इन सभी विकासशील कार्यों से यह विश्वास जगता है कि स्थिति को बेहतर ढंग से समझा जा सकेगा तथा जमीनी स्तर पर ठोस उपाय किए जा

सकेंगे। ये उपाय यह सुनिश्चित करेंगे कि सभी दिव्यांग व्यक्तियों को जीवन की जरूरतें पूरी करने के अवसर नीतियों एवं कानूनों के माध्यम से लागू किए जा सकें ।

❖ **आगे की राह/निष्कर्ष**

समुदाय-आधारित पुनर्वास (CBR) दृष्टिकोण: यह प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल स्तर पर एक व्यापक दृष्टिकोण है जिसका उपयोग उन स्थितियों में किया जाता है जहाँ सामुदायिक स्तर पर पुनर्वास के लिये आवश्यक संसाधन उपलब्ध होते हैं। CBR पद्धति यह सुनिश्चित करने के लिये आवश्यक है कि कोई भी दिव्यांग व्यक्ति अपनी शारीरिक और मानसिक क्षमताओं को अधिकतम स्तर तक बढ़ाने में सक्षम है, साथ ही उन्हें सभी अवसरों और सेवाओं की नियमित पहुँच सुलभ हो तथा उन्हें समुदाय में पूर्ण एकीकरण की स्थिति प्राप्त हो सके।

दिव्यांगता को लेकर जागरूकता में वृद्धि: सरकारों, सामाजिक संस्थाओं और पेशेवर संगठनों द्वारा दिव्यांगता से जुड़ी द्वेषपूर्ण मानसिकता या सामाजिक भेदभाव को दूर करने के लिये व्यापक सामाजिक अभियान चलाने पर विचार करना चाहिये। इस संदर्भ में मुख्यधारा की मीडिया ने फिल्मों (जैसे-तारे जमीं पर, बर्फी आदि) के माध्यम से दिव्यांग व्यक्तियों के सकारात्मक प्रतिनिधित्व के लिये सही मार्ग चुना है।

राज्यों के साथ साझेदारी: गर्भवती महिलाओं की देखभाल के संदर्भ में व्यापक जागरूकता और ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाओं की उन्नत एवं सुलभ पहुँच सुनिश्चित करना दिव्यांगता की समस्या से निपटने के प्रयासों के दो महत्त्वपूर्ण स्तंभ हैं। दिव्यांगता की समस्या से निपटने के इन दोनों कारकों की पहुँच सुनिश्चित करने के लिये राज्य सरकारों के सक्रिय सहयोग के साथ-साथ केंद्र सरकार को भी स्वास्थ्य क्षेत्र में व्यापक निवेश करना चाहिये। गौरतलब है कि भारतीय संविधान के तहत स्वास्थ्य को राज्य सूची में शामिल किया गया है। कोई भी नया कानून अपने उद्देश्य में तभी सफल हो सकता है जब दिव्यांग लोगों को उनके लिये आरक्षित पदों पर नियुक्त करने हेतु संबंधित अधिकारियों द्वारा इस संदर्भ में मज़बूत इच्छाशक्ति दिखाई जाए। इसके साथ ही भारत में एक संस्कृति विकसित करने की आवश्यकता है, जहाँ किसी भी बुनियादी ढाँचे का निर्माण करते समय दिव्यांग लोगों के हितों को भी ध्यान में रखा जाए। ‘दिव्यांग’ या 'डिफरेंटली एबल्ड' जैसे शब्दों के प्रयोग मात्र से ही दिव्यांग लोगों के प्रति बड़े पैमाने पर सामाजिक विचारधारा को नहीं बदला जा सकता। ऐसे में यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि सरकार द्वारा नागरिक समाज और दिव्यांग व्यक्तियों के साथ मिलकर कार्य करते हुए एक ऐसे भारत के निर्माण का प्रयास किया जाए जहाँ किसी की दिव्यांगता पर ध्यान दिये बगैर सभी का स्वागत

और सम्मान किया जाता है। हमारा दायित्व है कि दिव्यांगों की शारीरिक स्थिति को नजर अन्दाज करते हुए उनके आत्मविश्वास एवं मनोबल को बढ़ाएँ और उनकी कार्य क्षमताओं को देखते हुए उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास करें। दिव्यांग-साथियों को सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूक करें। उन्हें सामान्य जीवन व्यतीत करने में मदद करें ताकि हमारे दिव्यांग साथी अन्य लोगों के समान पूरे आत्मसम्मान के साथ जीवन व्यतीत कर सकें।

सुमन शर्मा,
अतिथि रचनाकार

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है - (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

राजभाषा अधिनियम और नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेका समूचित रूप से अनुपालन का उत्तरदायित्व कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का होगा ।

गजल

गाँव - कस्बे के मकान को संभाले रखना ।

जिन्दा रहने के लिए बस गाय को पाले रखना ।।

झूमते - गाते नीम - आमों की स्मृतियों को ।

पीपल की छाँव में पल सुस्ताकर पुष्प सुगंधित वाले रखना ।।

कुदाली हाथों में लेकर चलना है बहुत जरूरी ।

हाथों को दो मेहनत पर पाँव में छाले रखना ।।

कर दो उर्वरा जमीं को अपने इन हाथों से ।

हर दुख अपना बाँटो, अपनी मुसीबत को टाले रखना ।।

घर की चारदीवारी से इधर-उधर घूम आओ ।

सब कुछ खुला रखना पर घर में न ताले रखना ।।

सामंजस्य दोनों में इस कदर बिठाये रखना ।

गाय तो सीधी सादी रखना पर बैल मतवाले रखना ।।

रामानन्द शर्मा

(से. नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बनारस यात्रा वृतांत

अयोध्या, मथुरा, गया, काशी, कान्चि, अवन्तिका

पुरी द्वारिकावती चैन सप्तेता मोक्षदायिका ।

अभी अभी काशी जाने का अवसर मिला । वहां जाकर इस श्लोक का मर्म समझ में आया जिसे मैने सालो पहले अपने नाना के मूँह से सुन-सुन कर याद किया था ।

बनारस, वाराणसी या काशी दुनिया के सबसे बडे प्राचीन शहरों में से एक है । Mark Twain ने इसे older Than history क्यूं कहा था, इसे जानने के लिए एक बार काशी जाना ही होगा ।

बनारस की तंग गलियां इतनी तंग है कि हमारी बालकनियां उनसे कहीं अधिक चौडी लगती है । लेकिन उन तंग गलियों में प्रस्फुटित और पल्लवित होती हुई हमारी संस्कृति उतनी ही विशाल प्रतीत होती है । हर आंगन में एक मन्दिर और ऐसे ही एक मन्दिर में भगवान शिव के आगे समवेत स्वर में मंत्रोचार का अभ्यास करते छोटे-छोटे बच्चे । जहाँ हमारे घरों में बच्चों का ॐ नम: शिवायं बोलते हुए सुनना भी दुर्लभ है वहीं बनारस के इन नन्हें भगवाधारियों का गगन भेदी मंत्रोचार मानो कानों के लिए एक उत्सव था।

बनारस हिन्दु धर्म का केन्द्र होने से कहीं अधिक है । यहां आकर भारत के विभिन्न हिस्सों के रंग देखने को मिले । कई जगहों पर भवन निर्माण को देखकर लगा कि रवीन्द्र नाथ टैगोर के 'चोखेर - बाली' के कई दृश्यों को इन घरों मे फिल्माया जा सकता है । भवन निर्माण शैली कहीं बंगला तो कहीं दक्षिण भारतीय शैली का समन्वय लगी । यहां बनारसी साडियों की फैक्ट्री में जाकर ताना और बाना का सही अर्थ समझते हुए ज्ञात हुआ की अधिकांश पुश्तैनी बुनकर बंगाल से ही है । शहर में घूमते वक्त घरों के बाहर लगी तख्तियों पर मुखर्जी, चटर्जी

और बनर्जी लिखा हुआ देखते- देखते लगा कि मानो मैं बनारस नहीं कलकत्ता की गलियों में घूम रही हूँ । यहां पर अनेक दक्षिण भारतीय व्यंजनों की दुकानों के नाम दक्षिण भारतीय लिपि में ही लिखे हुए थे जो कि किसी अन्य उत्तर दक्षिण भारतीय नगर में कोई आम दृश्य नहीं हैं । यहां पर अनेक मन्दिर भी दक्षिण भारतीय द्रविड शैली में बने हुए हैं ।

यहां पर अधिकांश नाव चलाने वाले और मछुआरे मुस्लिम मिले जो कि गंगा पर नाव चलातें हुए हर एक घाट की कहानी कुछ यूं बताते है कि उनके मुस्लिम होने पर यकीन नहीं होता । देश में बढती धार्मिक असहिष्णुता के बीच बनारस की ये गंगा जमुना संस्कृति देखना एक सुकून जैसा था ।

पर इन सबसे खास जो मुझे लगा वो था यहां का मणिकर्णिका - घाट और मोक्ष - सदन, जिसकी चर्चा यहां होनी ही चाहिए । अक्सर लोग किसी ना किसी शहर में बस कर रहना चाहते हैं लेकिन बनारस वो शहर है जहां आकर लोग मरना चाहते हैं क्योंकि यहां की धरती को "मोक्ष दायिनी" माना गया है । आखिरी सांसे ले रहे लोग यहां मोक्ष सदन आकर अपनी मृत्यु का इंतजार करते है ताकि वो गंगा घाट पर भस्म होकर सदैव के लिए जीवन और मृत्यु के इस चक्र से मुक्त हो सकें।

शाम को गंगा की धार पर दो रोशनियाँ दिखाई देती है । एक दशाश्वमेघ - घाट पर हो रही गंगा महा - आरती की लौ और दूसरी और मणिकर्णिका घाट पर मुमुक्षाओं की चिताओं की अग्नि । एक ओर आह्लांद तो दूसरी और शोक, एक ओर आनन्द तो दूसरी ओर अवसाद । किन्तु गंगा तो किसी सच्ची योगिनी की भाँति दोनों ही से सर्वथा अप्रभावित निरन्तर बहती जाती है ।

बनारस के इन गंगा घाटों पर जाकर जो एक गहरी अनुभूति मुझे हुई वो यह हैं कि भारत शायद समूचे विश्व मे अकेला ऐसा देश है जहां प्राण त्यागने के लिए यदि उचित स्थान, उचित समय और उचित उदद्देश्य हो तो मृत्यु भी एक उत्सव माना जाता है।

आखिर में हिन्दी प्रेमियों को बता दूँ कि मुंशी प्रेमचन्द की जन्म और मृत्यु स्थली होने के कारण गंगा पर एक घाट का नाम प्रेमचंद घाट भी रखा गया है तथा ठठेरी बाजार में आधुनिक हिन्दी के जनक भारतेंदु बाबू हरिशचन्द का घर देखकर लगा की यह यात्रा आध्यात्मिक के साथ-साथ साहित्यिक स्तर पर भी सफल रही।

यह यात्रा वृतांत लिखते हुए मैं इन्हीं की लिखी ये पंक्तियां गुनगुना रही हूँ....

।। देखी तुम्हारी काशी लोगों, देखी तुम्हारी काशी.....

जहाँ बिराजे विश्वनाथ, विश्वेश्वर जी अविनाशी ।।

नेहा शर्मा

अतिथि रचनाकार

आधुनिक बहू

"कहाँ जा रही हो बहू?" स्कूटी की चाबी उठाती हुई सारिका से सास ने पूछा।

"मम्मी की तरफ जा रही थी अम्माजी"।

"अभी परसों ही तो गई थी"।

"हाँ पर आज पापा की तबियत ठीक नहीं है, उन्हें डॉ को दिखाने ले जाना है"।

"ऊहं! ये तो रोज का हो गया है, एक फोन आया और ये चल दी, बहाना चाहिए पीहर जाने का"।

सास ने जाते-जाते सारिका को सुनाते हुए कहा "हम तो पछता गए भई बिना भाई की बहन से शादी करके। सोचा था, चलो बिना भाई की बहन है तो क्या हुआ, कोई तो इसे भी ब्याहेगा।

अरे! जब लड़की के बिना काम ही नहीं चल रहा, तो ब्याह ही क्यूं किया"....ये सुनकर सारिका के तन बदन में आग लग गई, दरवाज़े से ही लौट आई ओर बोली, "ये सब तो आप लोगो को पहले ही से पता था ना अम्मा जी कि मेरे भाई नहीं हैं, और माफ करना.. इसमें एहसान की क्या बात हुई, आपको भी तो पढ़ी-लिखी कमाऊ बहु मिली है।"

"लो, अब तो ये अपनी नौकरी औऱ पैसों की भी धौंस दिखाने लगी।"

"अजी सुनते हैं, देवू के पिताजी"

सास बहू की खटपट सुनकर बाहर से आते हुए ससुर जी को देखकर सास बोली।

"पिताजी मेरा ये मतलब नही था, अम्माजी ने बात ही ऐसी की, कि मेरे भी मुँह से निकल गया"। सारिका ने स्पष्ट किया।

ससुर जी ने कुछ नहीं कहा और अखबार पढ़ने लगे।

"लो, कुछ नहीं कहा...लड़के को पैदा करो, रात-रात भर जागो, गंदगी साफ करो, पढ़ाओ लिखाओ, शादी करो... और बहुओं से ये सब सुनो । कोई लिहाज ही नहीं रहा छोटे-बड़े का"।

सास ने आखिरी अस्त्र फेंका ओर पल्लू से आँखें पोंछने लगी।

बात बढ़ती देख राजेश बाहर आ गया।

"ये सब क्या हो रहा है अम्मा?"

"अपनी चहेती से ही पूछ ले।"

"तुम अंदर चलो"। लगभग खींचते हुए वह सारिका को कमरे में ले गया।

"ये सब क्या है सारिका..? अब ये रोज की बात हो गई है।"

"मैंने क्या किया है राज, बात अम्मा जी ने ही शुरू की थी।"

"क्या उन्हें नहीं पता था कि मेरे कोई भाई नहीं है, इसलिए मुझे तो अपने मम्मी पापा को संभालना ही पड़ेगा।"

सारिका ने रूआंसी होकर कहा।

"वो सब ठीक है, पर वो मेरी मां हैं। बड़ी मुश्किल से पाला है उन्होंने मुझे। माता-पिता का कर्ज उनकी सेवा से ही उतारा जा सकता है। सेवा न सही, तुम उनसे जरा अदब से बात तो कर लिया करो।"

"अच्छा! बाहर हुई सारी बातचीत में तुम्हें मेरी बेअदबी कहाँ नजर आई?"

"तुम्हें ये नौकरी वाली बात नहीं कहनी चाहिए थी।"

"हो सकता है मेरे बात करने का तरीका गलत हो पर बात सही है राज और माफ करना..ये सब त्याग उन्होंने तुम्हारे लिए किया है, मेरे लिए नहीं। अगर उन्हें मेरा सम्मान ओर समर्पण चाहिए तो मुझे भी थोड़ी इज्जत देनी होगी। स्कूटी की चाबी ओर पर्स उठाते हुए सारिका बोली।

"अब कहाँ जा रही हो?" कमरे से बाहर जाती हुई सारिका से राजेश ने पूछा।

"जिन्होंने मेरी गंदगी धोई है, मेरे लिए रात रात भर जागे हैं, मुझे नौकरी करने लायक बनाया है, उनका कर्ज उतारने" ।

सारिका ने गर्व से ऊँची आवाज में कहा और स्कूटी स्टार्ट कर चल दी।

रश्मि राज

कनिष्ठ अनुवादक

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।-

- मैथिलीशरण गुप्त

व्यथा

कही, अनकही-सी एक व्यथा ।
किससे कहें मन की गाथा ।
सांसे दे गया पर जीवन ले गया ।
सागर दे गया पर प्यासा कर गया ।

रातें दे गया पर नींदे ले गया

दिल दे गया धड़कण ले गया ।

आशियां दे गया अरमां ले गया ।

जीने की आरज़ू, हमसे ही ले गया ।

कारवां ले गया और तन्हा कर गया ।

बेदर्द जमाने से क्या शिकवा करें ।

तमाम दर्द सह कर मायूस हो गये ।

अब ना रास्तों की खबर है ।

ना ही मंजिलों का पता है ।

सफर दर्द का लम्बा हो चला ।

ये दर्द की इन्तहा भी क्या खूब दे गया ।

हमको हम से ही चुराकर ले गया ।

रूचि गुप्ता

लेखापरीक्षा लिपिक

बेटी

मेरी पाँच साल की बेटी रास्ते में पानीपुरी के लिए मचल गई । किस भाव दिए हैं भाई, मैंने सवाल किया । 10 रू के 5 दिए हैं । गोल गप्पे वाले ने जवाब दिया । मुझे तो पता ही नहीं था कि इतने महँगे हो गये हैं । जब हम खाया करते थे तब 2 रू में 10 गोलगप्पे आ जाया करते थे । मैंने जब जेब में हाथ डाला, तो देखा बस 10 रू ही पड़े है। बाकी रूपये घर की जरूरत का सामान लेने में ही खर्च हो गये थे । गाँव शहर से दूर था । 10 रू तो बस के किराये में ही लग जाने हैं । मैंने मना कर दिया, रहने दो भाई, बहुत महँगे हैं । आज पैसे भी कम हैं। अगली बार जब शहर आएंगे तब जरूर खिलाऊंगा। यह सुनकर बेटी ने मुँह फुला लिया, गुस्सा करती हुई कहने लगी, आप हमेशा ऐसा ही करते हो बाबा, मुझे आपसे कोई बात नहीं करनी। अम्मा होती तो कभी ऐसा ना करती, अरे अब चलो भी, नहीं लेने इतने महँगे ।

मेरी बात सुनकर गोलगप्पे वाला कहने लगा, अरे खा लेने दो ना साहब, अभी आपके घर में है तो आपसे लड़ाई भी कर सकती है । लड़-झगड़कर अपनी बात भी मनवा सकती है । कल को पराए घर चली जायेगी तो पता नहीं ऐसे मचल पायेगी या नहीं। तब आप भी तरसोगे बिटिया की फरमाइश पूरी करने को । गोलगप्पे वाले के शब्द थे तो चुभने वाले पर उन्हें सुनकर मुझे मेरी बड़ी बेटी की याद आ गई, जिसकी शादी दो साल पहले ही एक खाते - पीते पढ़े - लिखे परिवार में की थी । शादी में कोई कमी नहीं छोड़ी थी । हँसती-खेलती फूल सी बच्ची दी थी । पर पहले साल से ही उसे सताना शुरू कर दिया। बेटी ससुराल में सुख से रह सके इसलिए दो साल तक मुट्ठी भर - भर के रूपये उनके मुँह में ठूँसता रहा पर उनका पेट बढता ही चला गया । लालच का भी कभी अंत होता है भला ...... और फिर एक दिन सीढियों से गिर कर बेटी की मौत की खबर ही मायके पहुंची । जब भी उसकी याद आती है तो ऐसे छटपटाता हूँ कि कैसे भी करके मेरी बेटी वापस आ जाए । चुन - चुन के उसकी फरमाइश पूरी कर दूँ । पर अब यह अंसभव है । अब वो कभी वापस नहीं आयेगी ।

बाबूजी दे दूँ क्या ?

गोलगप्पे वाले की आवाज से मेरा ध्यान टूटा ।

रूको भाई दो मिनिट .... ।

पास में ही पंसारी की दुकान थी जहाँ से घर का सामान खरीदा था । वहाँ से खरीदी गई पाँच किलो चीनी में से एक किलो चीनी वापस की तो 40 रू जेब में बढ़ गये । फिर ठेले पर जाकर

कहा, अब खिला दे भाई । आँखें पोंछते हुए, थोड़ा तीखा जरा कम डालना, मेरी बिटिया बहुत नाजुक है ।

यह सुनकर मेरी बेटी की आँखों में खुशी की चमक आ गई । उसने मुझे गले लगा लिया ।

बेटिया जब तक हमारे घर है, कोशिश करें उनकी जरूरत इच्छाएं पूरी करने की ।

क्या पता, आगे कोई इच्छा पूरी हो पाये या नहीं । माँ बाप की एक मुस्कान को तरसती हैं ये बेटियाँ । ससुराल में कितनी भी तकलीफ में हो पर मायके में एक भी आंसु नहीं बहाती, क्योंकि माँ बाप कभी अपनी बेटी को दुखी नहीं देख सकते । हो सके तो बेटियों को बहुत प्यार दे । उन्हें कभी ना रूलाये । ये बेटियां ही है, जो दो परिवारों को अपने प्यार और मुस्कान के साथ जोड़े रखती हैं।

प्रीती शर्मा

अतिथि रचनाकार

महालेखाकार कार्यालय राजस्थान, जयपुर द्वारा आयोजित पश्चिमी क्षेत्र आई ए एण्ड़ ए डी फुटबाल प्रतियोगिता के दृश्य

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
DEDICATED TO TRUTH IN PUBLIC INTEREST
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
RECREATION CLUB (AUDIT)

कार्यालय में आयोजित सेवानिवृत्ति समारोह का आयोजन के दृश्य

कार्यालय में आयोजित विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दृश्य

कार्यालय में आयोजित तिमाही हिंदी कार्यशाला के दृश्य

चारों कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित विशाल रक्तदान शिविर के दृश्य

कार्यालय में आयोजित योग दिवस की झलकियाँ

अन्न का सम्मान एवं सदुपयोग ही भोजन-विवेक है

मानव शरीर, मन एवं जीवन पर आहार का बहुत व्यापक प्रभाव है। आहार के बिना मानव जीवन संभव नहीं है। मानव का अस्तित्व ही आहार पर निर्भर है। बिना आहार के मानव में न तो प्राणबल संभव है और न ही शरीर बल । जीवन जीने के लिए भोजन जरूरी है लेकिन 'भोजन के लिए जीना' पशुता है। मानव बुद्धिशाली है, विवेकवान व्यक्ति है। अतः 'भोजन-विवेक' का होना अति आवश्यक है।

भारत संस्कृतियों का देश है तथा 'आहार संस्कृति', आहार-विवेक का वर्णन शास्त्रों में स्पष्ट है कि अन्न के एक-एक दाने का सम्मान हो, क्योंकि हमारे देश में अनाज को 'अन्नदेव' का दर्जा प्राप्त है, अन्न साक्षात ब्रह्म है। इसलिए इसका अपमान देवों का अपमान है तथा अन्न का अनादर करना पाप है, हिंसा है। मन्दिर के प्रसाद का एक दाना भी नीचे गिरने पर हम उठाकर सर पर लगाकर उपयोग करते हैं क्योंकि यह प्रभु का प्रसाद है। लेकिन विविध समारोह में, शादी-विवाहों में, धार्मिक कार्यक्रमों में यह 'भोजन-विवेक' गौण हो जाता है । हम यह भूल गये हैं कि जिस अन्न को पैदा करने में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने 'कृषि' (खेती) का अनुसन्धान कर सात्विक भोजन हेतु अन्न प्रतिपादित किया तथा उदरपूर्ति का सुगम साधन तैयार किया, आज उसी अन्न जिसकी बहुतायत नहीं होते हुए भी हम इसको कितना बर्बाद करते हैं? अनेकों अवसरों पर समाजसेवियों ने भोजन की बर्बादी को रोकने की अपील की है। प्रवचनों के दौरान साधु-सन्तों ने प्रत्याखानों के माध्यम से जूठा न छोड़ने के नियम करवाते हैं, लेकिन हमारे विवेक की कमी से यह कारगर सिद्ध नहीं हो रहा है।

आज अन्न की बर्बादी का ग्राफ बढ़ता ही जा रहा है । देश की गरीब जनता के साथ अन्याय है। इसकी अनदेखी 'समाजद्रोह' है। अतः हे विवेकयुक्त भव्य पुरुष, जरा चिन्तन कर और सोच, हमारे द्वारा व्यर्थ में छोड़े जाने वाला जूठन कितने गरीबों का पेट भर सकता है? यह ऐसा विषय नहीं है जिसे समझाना पड़े, फिर भी आज स्वयंसेवी संस्थाओं, सामाजिक संगठनों एवं गुरु भगवन्तों द्वारा इसकी श्रेष्ठ उपयोगिता के लिए बर्बादी को रोकने की अपील करनी पड़ती है, समझाना पड़ता है परन्तु तब भी हमारा यह दुर्भाग्य है कि हम इनका पालन नहीं करते।

इस विषय पर उदासीन रहना गरीबों के उदरपूर्ति के साथ कुठाराघात है, अन्याय है। इसके लिए 'स्व-विवेक' को जाग्रत करना जरूरी है क्योंकि ऐसा कोई घर नहीं जहाँ पर ऐसे कार्यक्रम न होते हों। चाहते सब हैं लेकिन अपनाते बहुत कम हैं। बढ़ती हुई आधुनिकता के कारण हमने अपने पुराने संस्कारों, रीति-रिवाजों को छोड़ दिया। जहाँ पंगत में बैठकर भोजन करते थे, जितनी आवश्यकता होती सामग्री लेते थे, परोसगारी वाली तसल्ली एवं सम्मान से भोजन परोसते थे । पंचायत की सीमाबन्दी होती भी तो उनके नियम-कायदे थे। अधिकतम पाँच मिठाईयों का प्रावधान था। सीमित मात्रा में भोजन के आईटम बनते थे। बचे हुए भोजन एवं जूठन का सदुपयोग भी होता था। बहुत ही

अल्प मात्रा में भोजन बर्बाद होता था। आज हमने इतनी पुरानी सुन्दर व्यवस्थाओं एवं रीति-रिवाजों को भूलकर सामाजिक बन्धनों को तोड़ दिया। दिखाने के नाम पर, आधुनिकता के नाम पर एवं अपने धन-वैभव के प्रदर्शन के नाम पर तीन सौ आईटम तक भोजन कार्यक्रम में बनवा लेते हैं, स्टॉल लगवा लेते हैं। कोल्ड एवं हॉट ड्रिंक अलग से लगवाते हैं। इनका कितना सदुपयोग हो रहा है, हमारे लिए यह एक प्रश्न चिन्ह है। आज शादी-समारोह में लाखों, सैकड़ों टन खाना बर्बाद हो रहा है, बोरे भर- भरकर फेंक दिये जाते हैं। हमारे देश की यह विडम्बना है जहाँ एक तरफ लोग खाने को मोहताज हैं, तो दूसरी तरफ इन प्रयोजनों में लाखों टन खाना बर्बाद किया जा रहा है। तथ्यों के आधार पर भोजन बर्बादी के निम्नलिखित कारण हैं-

(1) भोजन के प्रति असंवेदनशीलता एवं अविवेक- विश्व खाद्य संगठन (WFO) की रिपोर्ट में खुलासा हुआ की देश में हर साल पचास हजार करोड़ रुपये का भोजन बेकार चला जाता है जो देश के उत्पादन का 40 प्रतिशत हिस्सा है। एक आंकलन के अनुसार बर्बाद होने वाले भोजन की धनराशि से पाँच करोड़ बच्चों की जिन्दगी संवारी जा सकती है। रिपोर्ट में खुलासा हुआ कि भारत में बढ़ती सम्पन्नता के साथ लोग खाने के साथ असंवेदनशील हो रहे हैं। खर्च करने की क्षमता के साथ ही खाना फेंकने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। बड़े-बड़े रिसोर्ट में 5-10 हजार तक व्यक्तियों का खाना बनाया जाता है, जिसमें 150-300 तक आईटम बनाये जाते हैं। खाने वाला व्यक्ति एक-एक आईटम टेस्ट करे तब भी पूरे आईटम को टेस्ट नहीं कर पाते। ऐसे में अन्दाज लगाएं की कितना खाना बेकार होता है ? परिणाम यह होता है कि देश में विवाह स्थलों के पास रखे कूड़ाघरों में 40 प्रतिशत से अधिक खाना फेंका हुआ मिलता है। यदि हमारा विवेक जाग्रत होता है तो हम इस बर्बादी को रोक सकते हैं तथा बढ़ती खाद्दान की समस्या को हल कर सकते हैं। हमें भोजन-विवेक के प्रति संवेदनशील बनना होगा तभी इस बर्बादी को रोक पायेंगे।

(2) भूख से मौतों को बचाया जाय- जिस देश की संस्कृति का गुणगान पूरा विश्व करता हो, उस देश में यदि 'भूख से मौत' की खबर आए तो संस्कृति पर कलंक जैसा है। यह स्थिति तब हो रही है, जब अरबों रुपयों के सरकारी अनुदान पर खाद्य सुरक्षा की नई योजनाएं चल रही हैं । 'मिड डे मील' कार्यक्रम के तहत हर दिन 12 करोड़ बच्चों को दिन में भरपेट भोजन का दावा किया जाता है, जिसमें हर हाथ को काम पर और हर पेट को भोजन के नाम पर हर दिन सरकारी कोष से करोड़ो रुपये खर्च होते हैं। इतना होने पर भी भारत में हर साल 5 वर्ष से कम उम्र के दस लाख बच्चों के भूख से एवं कुपोषण से मरने के आंकड़े संयुक्त राष्ट्र ने जारी किये। देश के 51 प्रतिशत परिवार की आय का जरिया महज अस्थायी मजदूरी है। चार लाख परिवार कूड़ा बीन कर तथा 6.68 प्रतिशत लाख परिवार भीख माँगकर अपना गुजारा करते हैं।

आंकड़े स्पष्ट करते हैं सरकारी योजनाओं से भी उदरपूर्ति नहीं होती। अतः इस स्थिति में प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व बन जाता है कि 'भोजन' को बर्बाद नहीं करें। उसे बचाकर 'भूखों का सहारा बनें' यही भोजन-विवेक कारगर होगा। गाँवों की स्थिति और अधिक खराब है।

उनमें से 40 प्रतिशत परिवारों की औसत मासिक आय दस हजार रूपयों से भी कम है। हर दिन कई लाख लोग भूखे सोते हैं। विचारणीय बिन्दु यह है कि हमारे देश में हर साल उतना अन्न बर्बाद कर देते हैं जितना अन्न आस्ट्रेलिया पैदा करता है। नष्ट हुए अन्न की कीमत 50 हजार करोड़ रूपये होती है और इससे 30 करोड़ लोगों को सालभर खाना दिया जा सकता है। यदि सरकारी एवं स्वयंसेवी संस्थाएँ पारदर्शिता से काम करें तो लागू की गयी योजनाएँ भी अन्न की बचत कर सकती हैं।

(3) अन्न के भण्डार की पर्याप्त सुविधा का अभाव- समारोह में बनाए जाने वाले व्यंजनों को सुरक्षित रखना कठिन हो जाता है। इसको रखने के सुरक्षात्मक उपायों की व्यवस्था नहीं की जाती। आयोजनकर्त्ता बचे हुए भोजन को सुरक्षित रखने के पर्याप्त उपाय नहीं करते हैं और इसलिए वह भोजन खराब हो जाता है और फिर लोग इसे फेंक देते हैं।

कृषकों के द्वारा उत्पन्न किये गए अन्न को सुरक्षित रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में भण्डारण व्यवस्था जैसे- भारतीय खाद्य निगम (FCI), राज्य भण्डारण व्यवस्था आदि नहीं होने के कारण 'अन्न' को सुरक्षित नहीं रखा जाता। वह अन्न खुले में पड़ा रहता है, जिससे औसतन हर भारतीय एक साल में 6 से 11 किलोग्राम अन्न बर्बाद करता है। साल में जितना सरकारी खरीद का धान व गेहूं खुले में पड़े होने के कारण नष्ट हो जाता है, उससे ग्रामीण अंचल में 5000 माल भण्डारण बनाये जा सकते हैं। जरूरत है तो बस सशक्त प्रयासों की।

(4) फेंके जाने वाले भोजन से प्रदूषण- हमारे यहाँ बचे हुए भोजन को फेंकना भले ही मामूली सी बात हो या फिर किसी बड़े कार्यक्रम की अपरिहार्यता बताकर पल्ले झाड़ लिये जाये लेकिन यह 'पर्यावरण' की एक गम्भीर समस्या उत्पन्न कर रही है। इस सन्दर्भ में 'विश्व खाद्य एवं कृषि संगठन' द्वारा जारी रिपोर्ट में खाद्यान्नों के अपव्यय से जुड़ी चुनौतियों का बारीकी से विश्लेषण किया गया। इस रिपोर्ट में वैश्विक खाद्य अपव्यय का अध्ययन पर्यावरण की दृष्टिकोण से करते हुए बताया गया कि भोजन के अपव्यय से जल, जमीन और जलवायु के साथ-साथ जैव विविधता पर भी बेहद नकारात्मक असर पड़ता है। रिपोर्ट के अनुसार अपव्यय होने वाले इस भोजन की वजह से तीन अरब टन से भी ज्यादा मात्रा में खतरनाक ग्रीन हाऊस जैसी गैस उत्सर्जित होती है। रिपोर्ट बताती है कि लापरवाही और अनुचित गतिविधियों के कारण पैदा किये जाने वाले अनाज का एक तिहाई हिस्सा बर्बाद कर दिया जाता है।

इतना ही नहीं शादीयों एवं बड़े-बड़े समारोह में ढेर सारा खाना, जूठन, कचरे में चला जाता है। कई बार तो घरों के आस-पास फेंके गये भोजन से उठने वाली दुर्गन्ध एवं सड़ांध वहाँ के लोगों के लिए परेशानी खड़ी कर देती है एवं बीमारियाँ भी फैल जाती हैं। सड़े भोजन को जानवरों द्वारा खाने पर मौत के समाचार मिलते हैं तथा असंख्य जीवों की उत्पत्ति होने से हिंसा का पाप भी लगता है।

भोजन बर्बादी रोकने के उपायः-

(1) सरकारी नियमों को सख्ती से लागू किया जाये- खाने की बर्बादी को लेकर भारत सरकार चिन्तित है। खाद्य मन्त्रालय ने कहा है कि वह शादियों में मेहमानों की संख्या के साथ परोसे जाने वाले आईटमों की संख्या सीमित करने पर विचार कर सुनिश्चित करें।

कोरोना काल में सख्त प्रतिबन्ध लागू होने से, पैनल्टी प्रावधान, पुलिस का भय तथा कोरोना बीमारी के डर के कारण इन कार्यक्रमों पर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध लगा दिये गये थे। शादी में दोनों पक्षों के अधिकतम 50 व्यक्ति सम्मिलित होने की छूट सरकारी आज्ञा पत्र द्वारा दी जा रही थी। जिससे बिना आडम्बर व दिखावे के साधारण रूप से विवाह सम्पन्न हुए। किसी तरह की बर्बादी एवं अपव्यय नहीं था। ऐसी व्यवस्था को पुनः लागू किया जाये जिसमें व्यक्तियों की संख्या एवं आईटम तय हो।

अन्न की बर्बादी रोकने के लिए 'विवाह समारोह अधिनियम 2006' लागू किया गया लेकिन इसका कड़ाई से पालन नहीं हुआ। इस अधिनियम को सख्ती से लागू किया जाए तथा इसकी जानकारी लोगों तक पहुंचायी जाए। दिन में शादियों को महत्त्व दिया जाये, जिससे बचे हुए भोजन का उपयोग हो सके।

(2) महिलाएं एवं महिला संगठन आगे आएँ- नारी संस्कारदात्री, अतिसंवेदनशील तथा करुणा की देवी होती हैं। वह खाने की बर्बादी को रोकने के लिए बहुत कुछ कर सकती हैं। महिलाएं अपने बच्चों में बचपन से ऐसी आदत डाले कि जूठन नहीं डाले। उन्हें यह सीख दे 'उतना ही ले थाली में, व्यर्थ न जावे नाली में।' लेकिन आश्चर्य तब होता है जब जैन हॉस्टल, जैन भोजनशालाओं में पढ़ने वाले बच्चे जूठन छोड़ते हैं। सामाजिक कार्यक्रमों में 2-3 प्लेटों में भोजन ले लेते हैं। अतः महिलाएँ इन पर जरूर ध्यान देकर बच्चों को समझाएं तथा टेबुल मैनर्स सिखायें। महिलाएं स्वयं भी इसका पालन करें। महिलाएँ किट्टी पार्टियों में, महिला मण्डलों में भोजन बर्बादी रोकने की मुहिम छेड़े, आत्मीयता से इसका प्रचार-प्रसार कर जन आन्दोलन बनावें, जिससे भोजन की बर्बादी रुक सके । कई महिलाएं अपने एन.जीओ. के द्वारा धार्मिक मंडलों द्वारा आगे भी आई हैं, उन्हें और अधिक प्रयास करके अन्य क्षेत्र की महिलाओं को भी जोड़ा जाना चाहिए ।

आंकड़े स्पष्ट करते हैं सरकारी योजनाओं से भी उदरपूर्ति नहीं होती। अतः इस स्थिति में प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व बन जाता है कि 'भोजन' की बर्बादी नहीं करें। उसे बचाकर 'भूखों का सहारा बने' यही भोजन-विवेक कारगर होगा।

(3) समाजसेवी संस्थाएँ, धार्मिक संगठन तथा स्वयंसेवी संस्थाएँ जनचेतना जगाएं- अन्न की बर्बादी को रोकने तथा बचाने के लिए इन संगठनों की अहम भूमिका रही है। पुराने समय में पंचायत इन पर निगरानी रखती थी। समाज के लोग आगे रहते थे। अधिक व्यंजनों पर प्रतिबन्ध रहता था । आज प्रतिस्पर्धा के समय में व्यंजनों की, इनकी वैरायटी कि होड़ मची हुई है, अंतर्राष्ट्रीय स्तर के आईटम तैयार किये जाते हैं, भले भारतीय उन व्यंजनों को जानता नहीं है, स्वाद भी नहीं लिया है। ऐसे आइटमों की आवश्यकता नहीं है। समारोह को ऐतिहासिक नहीं, रूचिकर एवं सुपाच्य बनाया

जावें। आजकल कई संस्थाएँ इनके लिए आगे आई है तथा बहुत सराहनीय कार्य कर रही है। स्वयंसेवी संस्थाएँ भी पोस्टर, बैनर, व्यक्तिगत ध्यान एवं प्रेरणा द्वारा सक्रिय हो रही है। कुछ संस्थाएं निम्न प्रकार कार्य कर रही है-

(अ) रोटी बैंक बनाए जाएं- बड़े शहरों में 'रोटी बैंक' काम कर रहा है। इनसे जुड़े कार्यकर्ता समारोह स्थल तक पहुँच रहे हैं तथा बचे हुए भोजन को एकत्रित करके जरूरतमन्द लोगों तक पहुंचाते हैं। लेकिन इनका अभी प्रचार एवं विस्तार नहीं होने से यह सुविधा पर्याप्त नहीं है। अतः इनसे जुड़कर तथा अन्य स्थानों पर भी ऐसी व्यवस्थाएं अपनाई जावें ।

(ब) संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम अभियान- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण इकाई ने 'सोचें, खाएं और बचायें'- एक अच्छी पहल शुरू की है, जिससे जुड़कर खाने की बर्बादी को रोका जा सकता है।

(स) सरकारी अधिसूचना जारी की जावें- सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार दिल्ली सरकार ने अच्छी पहल शुरू की है। अधिसूचना जारी कर भोजन की बर्बादी को रोकने के लिए शादी, समारोह के आयोजकों को स्थानीय निकायों को सात दिन पहले बताना होगा कि कितने व्यक्ति समारोह में भाग लेंगे, कार्यक्रम कितने बजे प्रारम्भ होगा तथा कब समाप्त होगा। कार्यक्रम में खाना बचता है तो जरूरतमन्दों के लिए किस संस्था या उनकी एन. जी. ओ के पास पहुंचेंगे। इन सब बातों की जानकारी उन्हें देनी होगी। साथ में उन संस्थाओं का नाम, पता तथा सम्पर्क सूत्र भी स्पष्ट करना होगा। इस तरह के कदम सम्पूर्ण भारत में भी लागू किये जाएं।

(द) पाठशालाओं में पाठ्यक्रम में 'भोजन-विवेक' पाठ जोड़ना- बच्चों में अच्छी आदत डालने के लिए निजी व सार्वजनिक पाठशालाओं में अनिवार्य रूप से 'भोजन-विवेक' नामक पाठ को जोड़ा जाये, जिससे बच्चे को प्राथमिक स्तर पर अन्न के सम्मान की जानकारी मिले तथा उपयोग के बारे में जान सकें ।

(4) साधु-सन्त आगे आएं- सभी साधु-सन्त अपने स्तर पर नियम-प्रत्याख्यान करवाते हैं, प्रेरणा भी नियमित देते हैं लेकिन पूज्य आचार्यप्रवर श्री रामलालजी म.सा. ने उत्क्रान्ती विवाह कार्यक्रम के अन्तर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार जो बीड़ा उठाया है, उसमें आयोजकों से फार्म भरवाना, संकल्प पत्र भरवाना कि शादियाँ दिन में हो, आडम्बर रहित हो, डी.जे., बैंड संगीत-संध्या नहीं हो तथा भोजन में सीमित मात्रा में आइटम बनाये जाएं, जूठन नहीं डाला जाए इत्यादि का सराहनीय प्रयास किया है। इसके द्वारा समाज जन ने न केवल नियमों को ग्रहण किया है अपितु पूरे मनोयोग
से पालन भी कर रहे हैं। इस तरह के प्रयास अन्य सम्प्रदाय भी लागू करें, जिनमें भोजन की बर्बादी न हो, अपव्यय न हो तथा जीव हिंसा न हो।

धार्मिक आयोजनों में जहाँ चतुर्मास हो, वहाँ पर न्यूनतम आईटम निश्चित किये जाएं तथा भोजन हेतु न्यनूतम राशि का 'कूपन' सिस्टम लागू किया जाए। इससे व्यवस्था को सुचारू

रूप से चलाया जा सकेगा। यह व्यवस्था चातुर्मास खोलते समय ही निश्चित कर देनी चाहिए, जिससे सभी को जानकारी मिल सके।

(5) आहार विवेक का ध्यान रखा जाए- आहार-विवेक के लिए उत्तराध्ययनसूत्र में तथा अन्य शास्त्रों में भी (चरक संहिता, आयुर्वेद, ऋग्वेद) वर्णन आता है तथा स्पष्ट निर्देश श्रमण हेतु पाँच समिति, तीन गुप्ति में 'एषणा' समिति में स्पष्ट है। श्रमण के लिए तो ये अनिवार्य है ही लेकिन 'श्रावक' भी यदि इनका पालन करें तो भोजन का सदुपयोग होगा। शास्त्र स्पष्ट करते हैं, आहार कैसे लेना, किस प्रकार लेना, कहाँ से लेना, कितना लेना? इसके लिए 'गवैषणा, ग्रहनैषणा तथा परिभोगैषणा' में सब कुछ बताया गया है। कुल 42 दोष (16 उद्गम के, 16 उत्पादन के तथा 10 एषणा के दोष) टालकर आहार लेना तथा 5 दोष टालकर उपयोग करना अर्थात् 47 दोष टालकर श्रमण भोजन ग्रहण करते हैं। हम जैन हैं, कितने दोष टालते हैं, इस पर चिन्तन करके भोजन-विवेक का ध्यान रखने से आहार का न केवल सम्मान होगा वरन् सदुपयोग भी होगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भोजन का विवेक ही अन्न का सम्मान है। इसका सदुपयोग जरूरतमन्द की पूर्ति है। अतः भोजन की बचत एवं बर्बादी को रोकने के लिए व्यापक रूप से जनचेतना की आवश्यकता है। अतः इस पर सभी को ध्यान दिया जाना चाहिए।

पदम चंद गाँधी

(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

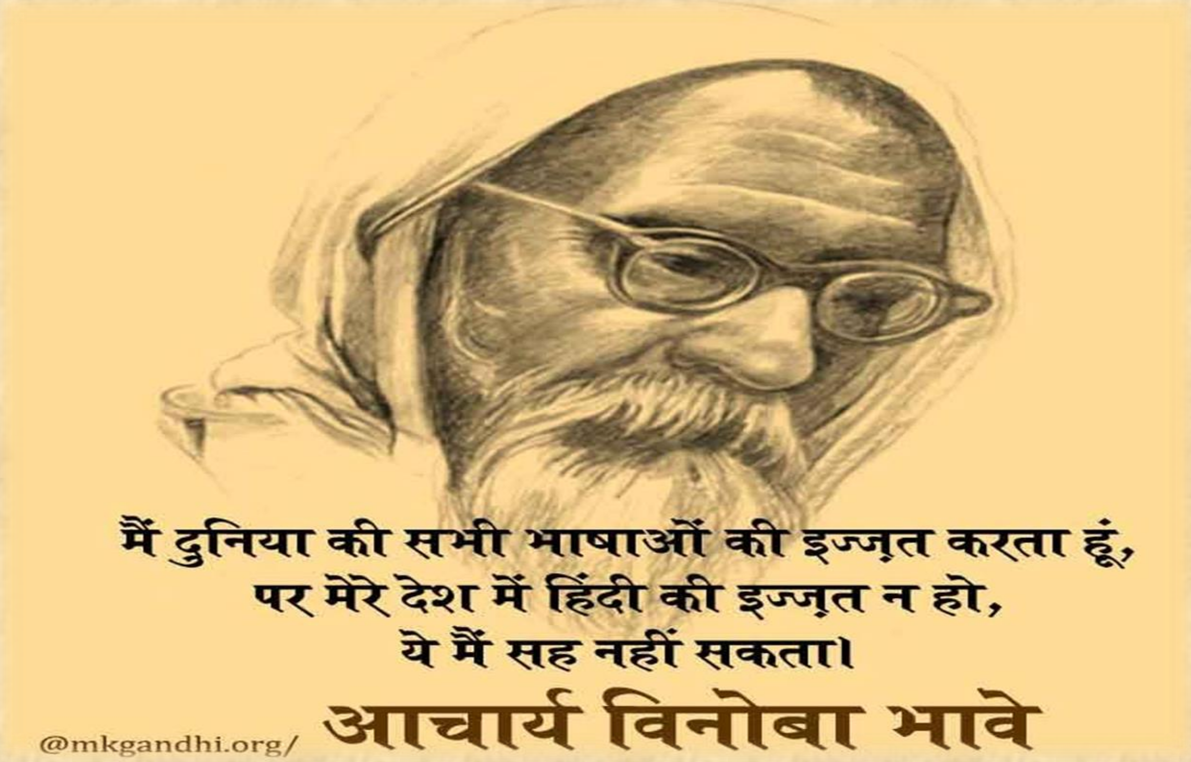

रैदास, एक प्रेमी भक्त

ये कहानी है उस महान संत की जिसके लिए भगवान को स्वयं धरती पर आना पड़ा । अगर कोई इस कलयुग में भी भगवान को धरती पर बुला ले तो उससे बडा भक्त कौन हो सकता है । संत रैदास जी का जन्म एक धनी किन्तु चर्तुवर्ण (चमार) जाति में हुआ था । मगर भक्ति किसी की जाति नहीं देखती । बचपन से ही ईश्वर भक्ति और संत सेवा का भाव जो मन में जगा वो अविरल बहता चला गया । जब भी किसी संत को दरवाजे पर आते देखते तो उसकी सेवा में जुट जाते, घर की मंहगी से मंहगी चीज उसे देने में संकोच ना करते । इस कारण उनके पिताजी उनसे थोड़े खफा रहते, मगर वो हर चीज से बेफिक्र बस नाम जप और संत सेवा में लीन रहते । उनकी आदतों में कुछ सुधार आ जाए ये सोच कर उनके पिताजी ने छोटी उम्र में ही उनकी शादी करा दी । मगर भक्ति का रंग जब चढ जाये तो वह आसानी से नहीं उतरता ।

एक दिन संत रैदास जी को तिजौरी की चाबी मिल गयी । उन्होंने जैसे ही तिजौरी खोली तो उसमें रखे पैसों को देखकर सोचा कि अब तो संतो की सेवा में कोई कमी नहीं रहेगी । उनकी जरूरत की हर वस्तु मैं ला सकता हूँ । वो हर रोज तिजौरी में से पैसे लेते, चाबी को उसकी जगह पर रखकर, निकल पड़ते बाजार की ओर और फल कपड़े खरीद कर संतों में बाँट देते । कुछ समय बाद जब उनके पिताजी ने तिजौरी को खोला तो वह उसे देखते ही समझ गये की किसी ने उसमें से पैसों को निकाला है, उन्हौन रैदास जी से पूछा तो उन्होंने कहा, पिताजी संतों की सेवा के लिए पैसे ले जाता हूँ । इतना सुनते ही पिताजी ने उन पर बहुत क्रोध किया कि पूरा दिन बस नाम जप में लगे रहते हो, एक पैसा भी घर में कमा कर नहीं लाते हो, उपर से मैं जो कमा कर लाता हूँ उसे भी संतों पर खर्च कर देते हो । इतना कह कर उन्होंने संत रैदास को घर से निकाल दिया । रैदास जी घर के पीछे पड़ी खाली जमीन पर छप्पर डाल कर अपनी पत्नी के साथ रहने लगे, मगर उनके मन में किसी प्रकार की चिंता ना थी । वो सोचने लगे भगवान कितने दयालु हैं । मुझे घर के बाहर भेज कर उन्होंने अच्छा ही किया अब मैं बिना किसी फिक्र के संतों की सेवा कर सकता हूँ । उन्होंने चमड़े के जूते-चप्पल बनाना शुरू कर दिया । जैसे ही किसी संत को नंगे पैर देखते, तुरन्त उसे चप्पल मुफ़्त में पहनने के लिए दे देते । जो थोड़ी बहुत आमदनी होती, उसमें से केवल भोजन के लिए रख कर बाकी सब संत सेवा में लगा देते, मगर कभी भगवान से कुछ ना मांगते । सर्दियों की पूरी रातें ठंड में कंपकंपाते हुए निकल जाती । बारिश में छप्पर में से पानी टपकता रहता मगर कभी अपने जीवन से शिकायत नहीं की । ऐसे ही बहुत समय बीत गया ।

एक दिन भगवान ने सोचा, मेरा भक्त इतनी तकलीफ में रहता है मगर कभी मुझसे कुछ नहीं मांगता । आज मैं खुद जाकर इसकी सहायता करता हूँ । भगवान कृष्ण ब्राह्मण के वेश में रैदास जी के घर आए, रैदास जी ने उनके चरण धो कर उन्हें आसन पर बिठाया और कहा कि, हे ब्राम्हण! हमारे घर पर तो भोजन कि व्यवस्था ठीक से नहीं है । हम तो सूखी रोटी नमक से खाते हैं । आप कुछ रूपए ले लीजिए और बाजार से जो मन हो वो खा लेना । तब भगवान ने

कहा, अरे हमने तो तुम्हारी संत सेवा के बारे में बहुत सुना था, लेकिन तुम तो हमे भूखे पेट भेज रहे हो । हमने तो सुना है भाभी बहुत अच्छा खाना बनाती है, उनसे कहो कि हम सूखी रोटी ही खा लेंगे । भोजन करने के बाद भगवान ने कहा कि मैं आपकी सेवा से बहुत खुश हूँ, किन्तु आपकी दयनीय दशा से मैं बहुत दुखी हूँ । आप ये पारस मणि रख लीजिए, इसे आप जिस चीज से छुआएंगे, वो सोना बन जायेगी । रैदास जी ने कहा कि हे ब्राह्मण देव ! ये पत्थर मेरे किसी काम का नहीं है, भगवान ने जो मुझे दिया है मैं उसमें खुश हूँ, भगवान सोचने लगे मेरा भक्त कितना भोला है, इतनी अमूल्य मणि को पत्थर बता रहा है और इसे लेने से मना कर रहा है, भगवान ने जिद करके वह मणि रैदास जी को दे दी, मगर रैदास जी तो बस नाम जप को सबसे बडा धन समझते थे । कुछ समय बाद भगवान फिर ब्राम्हण के वेश में रैदास जी कि स्थिति देखने आए, भगवान ने देखा कि रैदास जी स्थिति पहले जैसी ही है, भगवान ने रैदास जी से कहा कि आपने उस पारस मणि का उपयोग नहीं किया, रैदास जी बोले, हे ब्राम्हण देव! मैंने तो आपसे पहले ही कहा था कि ये मेरे किसी काम की नहीं , आप इसे ले जाइए । भगवान बिना पारस मणि लिए वहां से चले गए, उसी दिन रात्रि में स्वप्न में भगवान ने रैदास जी से कहा कि, रैदास वो ब्राम्हण मैं ही था । तुम उस पारस मणी का प्रयोग करके अपने जीवन को सुखी बनाओ । रैदास जी ने प्रभु की आज्ञा मानकर उस पारस मणी के प्रभाव से मंदिर और संतों के सोने के लिए कमरे बनवाए । पारस मणी के प्रभाव से धन की कोई कमी नहीं थी इसलिए रोज अनेकों संतों के लिए भोजन बनता । संतों के कीर्तन से रैदास जी का आंगन गूंजता रहता, उनकी ख्याति हर रोज बढने लगी, तभी कुछ ब्राहमणों को उनसे ईर्ष्या होने लगी और वह राजा के दरबार में आ कर राजा से कहने लगे कि है राजा ! शीघ्र ही तुम्हारे राज्य का नाश होना वाला है । राजा ने कहा, लेकिन किन कारण से ? ब्राहमणों ने कहा कि एक चर्तुवर्ण रैदास भगवान की पूजा करता है, संतो को भोजन कराता है । यह अधिकार जो केवल ब्राहमणों को है, अगर आपने उसे नहीं रोका तो आपके राज्य का नाश होने से कोई नहीं रोक सकता । राजा ने रैदास को अपने दरबार में बुला कर बहुत फटकार लगाई और पूजा करने से मना कर दिया । तब रैदास जी ने कहा कि आप श्री कृष्ण को सिंहासन पर विराजमान कीजिए, जिसकी प्रार्थना पर भगवान उसकी गोद में आकर बैठ जाएंगे, उसे भगवान की पूजा का अधिकार होगा । राजा की आज्ञा से ब्राहमणों ने अनेकों मंत्रो का उच्चारण शुरू किया, मगर सिंहासन अपनी जगह से नहीं हिला । अब बारी थी रैदास जी की । रैदास जी ने अपनी आँखें बंद करके करूणा के साथ भगवान को पुकारा, उनकी करूणामयी आवाज सुनकर भगवान सिंहासन सहित उस मूर्ति के रूप में रैदास जी कि गोद में आकर बैठ गए । पूरा महल जय जयकार से गूँज उठा । राजा ने आदेश दिया कि अब से रैदास जी कि भक्ति में कोई बाधा नहीं डालेगा । रैदास जी कि भक्ति के बारे में जब मीराबाई ने सुना तो उन्होंने रैदास जी को अपना गुरू बना लिया और कृष्ण भक्ति में आगे बढी, सच में भक्ति के वश में सब कुछ है, बस जरूरत है नि:स्वार्थ भाव से सब में भगवान भाव देखकर निरंतर नाम, जप व सबकी सेवा की ।

उमा शर्मा

अतिथि रचनाकार

क्या खोया क्या पाया

दृश्य -1

एक व्यवस्थित सा कमरा जिससे एक बालकनी सटी है। कमरे में बारह तेरह साल का एक बच्चा किताब खोलकर बैठा है और बार-बार बालकनी से बाहर झांकने की कोशिश कर रहा है, मगर डर कर इधर-उधर देखता है कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है। तभी उसकी मां, रमा गुस्सा करते हुए कमरे में आती है।

मां- रोहन मैंने तुझे यहां पढ़ने के लिए बैठाया है या बाहर तांक झांक करने के लिए।

रोहन - (घबराते हुए) मां पढ़ ही तो रहा हूं । वह तो बस ऐसे ही मन किया बाहर देखने का तो देखने लगा ।।

मां- (मुंह बनाकर) मन किया । तू मुझे बेवकूफ समझता है क्या ? किताब लेकर बैठा है और ध्यान कहीं और। तेरा ध्यान कहां है मुझे पता है। पर तू कितना भी कर ले, आज तू बाहर खेलने नहीं जाएगा बस ।।

रोहन - क्यों खेलने नहीं जा सकता। मेरे सभी दोस्त नीचे पार्क में खेल रहे हैं । रोज तो जाता हूँ ना मैं । आज क्यों नहीं जाने दे रही हैं।

मां - क्योंकि इस बार तू अपनी क्लास में फर्स्ट आया है इसलिए।

रोहन - इसलिए नहीं जा सकता (चौंक कर पूछता है) मतलब फर्स्ट आ कर मैंने गलती कर दी क्या ?

मां - "अरे तू समझ नहीं रहा बेटा । अब तुझे ज्यादा मेहनत करनी है और आईआईटी इंजीनियर बनना है । इसकी तैयारी आज से ही शुरु करनी पड़ेगी, तभी जाकर कुछ होगा ।

रोहन - पर मां । आज अचानक, यह आईआईटी का भूत आप के अंदर कैसे घुस गया?

मां - बस बहस मत कर और पढ़ने बैठ जा। खेलने कूदने से जिंदगी खराब होती है, यह बात समझ ले तू । वो सामने वाले शर्मा जी के बेटे का आईआईटी में हो गया। वो आज ही मिठाई देने आई थीं और एक तू है, जिसे दिन भर बस खेलना सूझता है ।

रोहन- (मन में सोचते हुए) हे भगवान, पता होता तो वो मिठाई कभी नहीं खाता।" पर मां अभी तो मेरी छुट्टियां चल रही हैं । कल ही तो रिजल्ट आया है। स्कूल खुलने में थोड़ा वक्त है । अभी तो खेलने दो । आईआईटी इंजीनियर बनने में तो अभी बहुत साल बाकी है। एक दिन इंजीनियर भी बन जाऊंगा। तो मैं जाऊं ? (उठते हुए पूछता है)

मां - कहां जाऊं (कान पकड़ते हुए) चुपचाप बैठ कर पढ़ाई करो और अब से तू कभी भी खेलने नहीं जाएगा । दिन रात तुझे सिर्फ पढ़ाई करनी है वैसे भी आईआईटी की तैयारी में काफी देर हो चुकी हैं।

रोहन - मां मेरा कान तो छोड़ दो। बहुत दर्द हो रहा है। अच्छा नहीं जाऊंगा खेलने पर अभी तो मैं सेवंथ क्लास में ही आया हूं, अभी से क्या आईआईटी की तैयारी करूंगा?

मां - तू सेवंथ क्लास की बात करता है लोग तो फिफ्थ क्लास में बच्चों को आईआईटी की तैयारी करवाना शुरू कर देते हैं, तब जाकर उनका सिलेक्शन होता है । अभी तेरे पापा से बात करके तेरी कोचिंग चालु करवाती हूं।

तभी कमरे में पापा का प्रवेश होता है जो दफ्तर से लौटे हैं।

पापा - "क्या गंभीर बातचीत हो रही है मां बेटे में, जो आज मुझे शाम की चाय भी नसीब नहीं हुई"।

मां - "आपको आपकी चाय की पड़ी है और यहां बच्चे का भविष्य खराब हो रहा है। आपको - पता है रोहन खेलने जाने की जिद करने लगा है।

पापा- तो जाने दो ना उसे । और अभी तो उसकी छुट्टीयां है ।

रोहन - मैं भी तो यहीं कह रहा हूं पापा ।

मां - तू चुप कर। बिगाड़ के रख दो इसको, फिर मत कहना कि मेरा बेटा जिंदगी में कुछ बन नहीं पाया।

पापा- तो तुम क्या चाहती हो बताओ, वह कर देते हैं। अब इससे मेरा बेटा इंजीनियर बनता है तो मैं कुछ भी करने को तैयार हूं ।

मां - इतना कुछ करने की जरूरत नहीं है। सिर्फ इसको कोचिंग में डाल दो और जल्दी ही इसकी कोचिंग शुरु करवाओ ।

पापा- ठीक है। तुम सही कह रही हो। मैं कल ही इसकी कोचिंग के बारे में पता करता हूं और उसकी फीस का भी इंतजाम करने की कोशिश करता हूं। पर भाई अभी तो गरम गरम चाय पिला दो। कब से चाय के इंतजार में बैठा हुआ हूं।

रोहन - तब तक मुझे भी आज तो खेलने जाने दो (धीरे से बोलते हुए)

मां - नहीं मतलब नहीं होता है तो रोहन। चुपचाप बैठ कर पढ़ाई करना शुरू कर दें और खेलना वेलना भूल जा।

कहते हुए मां रसोई घर की तरफ चली जाती है और पापा भी उनके पीछे-पीछे चाय पीने चले जाते हैं। कमरे में रोहन अकेला बैठा, बालकनी से बच्चों को नीचे खेलते देखता है

और सोचता है। क्या जरूरी है मैं इंजीनियर ही बनूं । ऐसी इंजीनियरिंग किस काम की जो मुझे खेलने से ही रोक दे, कितना मजा आ रहा है इन बच्चों को। क्या इन लोगों को इंजीनियर नहीं बनना है और जिन्हें इंजीनियर बनना होता है, उन्हें खेलना छोड़ना पड़ता है क्या?

दृश्य - 2

कमरे में बाबूजी का प्रवेश जो की लगभग 68 साल के है।

बाबूजी - (आवाज लगाते हुए) बहू ओ बहू.. कहां है.. चाय का क्या हुआ ?

बहू - बनाती हूं बाबूजी (मन में बुदबुदाते हुए) जब से गांव से आए हैं, सारा दिन घर में बस बहू बहू की आवाज ही आती रहती है। और कुछ कह नहीं सकती, क्योंकि पतिदेव जान छिड़कते हैं अपने बाबू जी पर.....

बहू - "लीजिए बाबू जी चाय ।

बाबूजी - अरे बहू। रोहन कहीं दिखाई नहीं दे रहा । जब से आया हूँ उससे बात करने को भी तरस गया।। क्या करता रहता है वह।

बहू - बाबूजी, वह आईआईटी की तैयारी कर रहा है ना, इसलिए पढ़ता रहता है।

बाबूजी- यह भी कोई बात हुई बेटा। प्रकृति और परिवार के साथ अगर समय नहीं बिताएगा तो भावना शून्य हो जाएगा। फिर परिवार और रिश्तों का मोल कैसे पहचानेगा ? सभी चीजें अपने सही अनुपात में ही होनी चाहिए।

बहू- "पर आज के जमाने में भावनाओं का कोई मोल नहीं बाबूजी। मैंने रोहन को भी यहीं सिखाया है। आज आदमी सिर्फ डिग्री और पैसे से ही पहचाना जाता है"। आपका जमाना और था ।

बाबूजी- "पर बेटा"..(बात काटते हुए) छोड़िए बाबूजी जमाना बदल गया है । आपको कुछ और चाहिए तो बता दीजियेगा ।

दृश्य - 3

पापा घबराए हुए पापा से रसोई में दाखिल होते हैं, जहां रमा खाना बना रही है। रमा, तुम्हें पता चला क्या हो गया ।। अरे वो अजय है ना, रोहन का सबसे खास दोस्त, आज उसका.......

रमा - "हां मुझे पता चला, आज वह मर गया"।

पापा "तुम यह इतने आराम से कैसे कह रही हो" ? क्या तुमने रोहन को बताया?

रमा- "मैं कोई पागल थोड़ी हूं जो उसको बताऊंगी"। जल्द ही उसका आईआईटी का पेपर है, उसे पढ़ने दो। जीवन मृत्यु तो लगी ही रहती है ।

पापा- तुम कैसी बातें कर रही हो ? उसका सबसे खास दोस्त। एक बार अंतिम दर्शन...

रमा - (बात काटते हुए) ऐसी भावनाओं की आज के जमाने में कोई जगह नहीं । आप भी थोड़े प्रैक्टिकल बनिए । रोएगा धोएगा और अपना समय खराब करेगा बस । बाद में उसे अपने आप ही पता चल जाएगा। भावनाओं में बहकर सिर्फ नुकसान ही होता है।

पापा (उदास हो कर) शायद तुम ठीक कहती हो । मैं बेवजह ही भावुक हो रहा हूं ।

दृश्य - 4

घर के बाहर टैक्सी खड़ी हैं और रोहन जाने को तैयार खड़ा है।

मां - "रोहन सब सामान रख लिया ना बेटा" । एक बार देख ले कुछ छूटा तो नहीं। अब तू आईआईटियन बनने जा रहा है। मुझे बहुत फर्क है तुझ पर पर सिर्फ पढ़ाई पर ही ध्यान रखना। दोस्त वोस्त मत बनाने लग जाना।

रोहन - मां तुम मेरी बिल्कुल चिंता मत करो । मुझे दोस्तों की कोई जरूरत नहीं है। बस कुछ सालों बाद देखना, मैं कितना पैसा कमाने लग जाऊंगा।

पापा - समय समय पर फोन करते रहना बेटा। (भरी आंखों से) तेरी बहुत याद आएगी ।

रोहन - क्या पापा आप भी ना । इतने इमोशनल क्यों हो । मस्त रहा किजिए मेरी तरह और सिर्फ अपने बारे में सोचा करिए। अच्छा चलता हूं ।

दृश्य - 5

कमरे में पापा और रमा गंभीर होकर बात कर रहे हैं।

पापा - रमा तुम्हारे पास रोहन का कोई फोन आया क्या ? उसका फोन आए हुए कितने दिन हो गए। शुरू शुरू में तो फोन करता था पर अब तो जैसे हमें भूल ही गया ।

रमा - नहीं मेरे पास नहीं आया। अच्छा ही है ना, अपना ध्यान पढ़ाई पर रखेगा, घर को याद करने से क्या मिलेगा । वो बहुत प्रैक्टिकल है। ऐसे याद वाद नहीं करता और मैंने ही बनाया है उसको ऐसा।।।

पापा - यह भी सही है। (सोचते हुए) अभी कल ही की बात लगती हैं जब वो गया था और अब देखो उसका कालेज ही खत्म होने वाला है। समय कैसे पंख लगा कर उड़ गया।

दृश्य - 6

बाबूजी बिस्तर पर मरणासन्न पड़े हैं और बगल में रमा और पापा उन्हें संभाल रहे हैं।

बाबूजी - "मेरे रोहन को एक बार मेरी आंखों के सामने ला दो, तो मैं चैन से मर सकूं । मेरी जान मेरे रोहन में अटकी है, तुम लोग फोन करके उसे बुला क्यों नहीं लेते ?

पापा- अरे बहुत फोन किए मैंने उसे, पर ना वह फोन उठाता है ना ही कॉल बैक करता है। पहले तो हाल चाल पूछ लेता था पर अब ना जाने कौन सी दुनिया में खो गया है। भावनाएं खत्म हो गई है क्या उसके अंदर से ? लगता है जैसे हम सब को भूल गया है।

दृश्य - 7

बाबूजी का देहांत हो चुका है। पापा और रमा अकेले बैठ कर दुखी हो रहे हैं।

रमा - आज बाबू जी की बरसी है । अब तो रोहन को बोलो आने को ।

पापा - कल बात हुई थी मेरी उससे । कह रहा था अभी नहीं आ सकता। जीवन मृत्यु तो लगी ही रहती हैं। ऐसा तुम्हीं ने सिखाया था उसे । अब उसके पास समय नहीं है । उसकी पोस्टिंग विदेश में कहीं हो गई है वहीं जा रहा है।

रमा - क्या...... (रोते हुए)

और हम दोनों क्या बुढ़ापे में यूं ही अकेले, उसके इंतजार में, बैठे रहेंगे।

पापा - (आंसू पोछते हुए) हमारे घर में एक बहुत बढ़िया इंजीनियर तो है मगर हमने, उसे यह बनाने के चक्कर में अपना इकलौता बेटा खो दिया ।

रमा - आप सही कह रहे हैं। शायद मेरी ही गलती हो गई, जो मैं उसे उड़ान भरने के लिए जमीन पर पैर रखना सिखाना भूल गई। इंसानियत और भावना महसूस करना भूल गई । उसे रोना और हारना सिखाना भूल गई। उसे मैंने ही एक पैसे छापने वाली मशीन बना दिया । दुनिया को देख कर उसे जाने कौन सी दुनियादारी सीखा दी और आज मेरी ही लगाई आग ने मेरा ही घर जला दिया। आज बाबूजी की बहुत याद आ रही है । ठीक है, उनका बेटा एक बड़ा इंजीनियर नहीं है पर एक अच्छा बेटा तो है, जिसके कंधे पर वह अनंत यात्रा पर चले गए। मुझे माफ़ कर देना क्योंकि मेरी वजह से हमने सब कुछ पाकर भी सब कुछ खो दिया।

शालिनी दायमा
अतिथि रचनाकार

अपने वतन की सबसे प्यारी भाषा,
हिंदी जगत की सबसे न्यारी भाषा

समय की पाबंदी

आज से लगभग 48 वर्ष पूर्व हमारे देश में आपात काल के दौरान यह प्रेरक वाक्य जगह - जगह लिखा जाता था 'समय की पाबंदी सिर्फ रेलों के लिए ही नहीं है' । उस दौरान बहु प्रचारित प्रसारित यह संदेश सदैव प्रेरक व प्रासंगिक है । हम सबको समय की पाबंदी का पालन करना चाहिए । बचपन से ही माता-पिता अपने बच्चों को प्रात: समय पर उठाते हैं, उन्हें समय पर ही खाना खाने, नहलाने धुलाने का कार्य व रात्रि में समय पर शयन करवाते हैं। बालक समय पर विधालय जाता है। विधालय में भी विधार्थी को जीवन में हर कार्य समय पर करने की शिक्षा दी जाती है; जो विधार्थी विलम्ब से विधालय जाते है उन्हें अध्यापकगण समय पर आने का पाठ पढाते हैं । इस प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में समय का महत्व है, कार्यस्थल पर प्रत्येक कार्मिक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह समय की पाबंदी का विशेष ध्यान रखें, कार्यस्थल पर सदैव समय पर पहुंचना आवश्यक होता है । कार्यस्थल पर समय पर पहुंचने वाले कार्मिक सदैव प्रशंसा के पात्र रहते है व उनकी इस अच्छी आदत की वजह से उनकी हमेशा सराहना की जाती है । चाहे सहकर्मी हों या उच्चधिकारी सब ही समय के पाबंद कार्मिक का उदाहरण विलम्ब से आने वालों के समक्ष कहते हैं व उससे कुछ सीखने का संदेश देते है ।

कार्यस्थल के अतिरिक्त हमें रोजमर्रा के जीवन में भी हरसम्भव समय की पालना का ध्यान रखना चाहिए । समय पर पहुंचने वाला व्यक्ति हर क्षेत्र में आगे रहता है । लेखक को भी अपने जीवन में अंसख्य बार समय पर पहुंचने का लाभ प्राप्त करने व विलम्ब से पहुंचने पर नुकसान उठाना पडा था। रेल, बस व वायुयान में यात्रा करने वाले यात्री को भी समय पर रेल्वे स्टेशन, बस स्टैण्ड व हवाई अड्डे पहुंचना होता है।

सामाजिक आयोजनों में समय के पाबंद व्यक्तियों को कभी कभी कुछ प्रतीक्षा भी करनी पड़ जाती है । सामाजिक उत्सवों, आयोजनों में जाने वाले समझदार बंधु कुछ विलम्ब से आयोजनों में पहुंचकर भी उत्सव, आयोजन का आनन्द ले लेते है ।

स्वयं लेखक को कई बार साहित्यिक गोष्ठियों में समय पर या कुछ पूर्व पहुंचने पर दरी बिछाने से लेकर कुर्सियां पोछने तक का सुअवसर भी प्राप्त हो चुका है । कई बार विवाह उत्सव व अन्य उत्सवों में भी समय पर पहुंच जाने के कारण बैंड वादकों व आयोजकों के साथ बैठकर उनके अनुभव सुनने का मौका भी मिल चुका है। विवाह शादी के निमंत्रण पत्रों में दिये

गये समय पर पहुंचने वाले अतिथि को रूचिकर भोजन के प्राप्त करने के लिए एक घंटे से अधिक की प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है । आज कल शादी विवाह के निमंत्रण पत्रों में रूचिकर भोजन के प्रारम्भ के समय के साथ “आपके आने तक” का वाक्यांश भी छपा हुआ होता है ।

समय के पाबंद विशेषज्ञ असका अक्षरश: पालन करते हुए निर्धारित समय से 1 से 2 घंटे विलम्ब से पहुंचकर भी आनन्दपूर्वक स्वादिष्ट भोजन ग्रहण कर लेते है ।

जीवन के हर क्षेत्र में समय की पाबंदी का महत्व है व हर व्यक्ति को समय की पाबंदी का विशेष ध्यान रखना चाहिए । हर सफल व्यक्ति में समय की कद्र करने का विशेष गुण पाया जाता है ।

देव शर्मा
(से.नि.) सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया" -डॉ. राजेंद्र

हिंदी हृदय की भाषा हैं, जिसकी वजह से हमारे शब्द हृदय से निकलते हैं और हृदय तक पहुँचते हैं।

कार्यालय द्वारा छः माही में राजभाषा हिन्दी में किये गये कार्य का प्रगति प्रतिवेदन

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अन्तर्गत विनिर्दिष्ट कार्यालय आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखे जाने वाले राजकीय कागज-पत्र, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञा पत्र, निविदा सूचनाएँ और निविदा प्रारूप द्विभाषी रुप (अंग्रेजी और हिन्दी) में जारी किए जाने चाहिएँ। वर्ष के दौरान कुल **03** कार्यालय आदेश द्विभाषी रूप से जारी किए गए।

राजभाषा विभाग (राजभाषा नियम 5 के अन्तर्गत) के अनुसार हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों **13,238** में से **7,295** पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया गया। शेष पत्रों का उत्तर दिया जाना अपेक्षित नहीं था। छः माही के दौरान अंग्रेजी में कुल 1100 पत्र प्राप्त हुए जिसमें से 529 पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए गए।

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार 'क' एवं 'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों से 100% एवं 'ग' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों से 65% पत्राचार हिन्दी में करना अनिवार्य है। इन क्षेत्रों में कार्यालय द्वारा छः माही में कुल **19,838** पत्र भेजे गए जिनमें से हिन्दी में **19,580** पत्र एवं अंग्रेजी में मात्र **258** पत्र प्रेषित किए गए।

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा फाइलों में 'क' क्षेत्र में 75%, 'ख' क्षेत्र में 50% एवं 'ग' क्षेत्र में 30% टिप्पण हिन्दी में लिखे जाने अनिवार्य हैं। कार्यालय द्वारा वर्ष में कुल **12,763** टिप्पण लिखे गए जिनमें से हिन्दी में लिखे गए टिप्पणों की संख्या **12,083** है जो कि निर्धारित लक्ष्य से अधिक है।

इस छः माही के दौरान कार्यालय द्वारा **291** निरीक्षण प्रतिवेदन हिन्दी में जारी किए गए। कार्यालय में यूनिकोड-इन्स्क्रिप्ट की-बोर्ड प्रशिक्षण व्यवस्था की स्थापना की गई व इस दौरान कुल **06** अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया ।

इस छः माही में 02 हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें कुल **21** कार्मिकों द्वारा भाग लिया गया। कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 02 तिमाही बैठकों का आयोजन कार्यालय प्रमुख की अध्यक्षता में किया गया एवं सभी सदस्य शाखाधिकारियों ने उक्त बैठकों में भाग लिया। सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग के अन्तर्गत कार्यालय की वेबसाइट पूर्ण रूप से द्विभाषी एवं अद्यतन है।

छः माही में अन्य कल्याणकारी गतिविधियाँ

कार्यालय में 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा ध्वजारोहण किया गया एवं कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

21 जून को चारों कार्यालयों द्वारा सामूहिक योग दिवस मनाया गया ।

पश्चिमी क्षेत्र फुटबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

चारों कार्यालयों के द्वारा संयुक्त रूप से विशाल रक्त दान शिविर लगाया गया।

श्री अरूण कुमार शर्मा
कल्याण अधिकारी

हिंदी भाषा नहीं, भावों की अभिव्यक्ति है। यह मातृभूमि पर, मर मिटने की शक्ति है।

क्षेत्र	क्षेत्र में शामिल राज्य/संघ राज्य क्षेत्र
'क'	बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र
'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन व दीव और दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र
'ग'	'क' और 'ख' क्षेत्र में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र

पाठकों के अभिमत

देश के विभिन्न कार्यालयों से पिछले अंक पर प्रतिक्रिया स्वरूप हमें सुधी पाठकों के जो अभिमत प्राप्त हुए, उनमें से कुछ पत्रों के अंश साभार प्रकाशित कर रहे हैः-

आपके कार्यालय के संदर्भ में हिन्दी पत्रिका लेखापरीक्षा अर्चना के 18 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए यह कार्यालय आपका आभारी है ।

पत्रिका के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु किया गया प्रयास अत्यन्त सराहनीय है एवं छाया चित्रों का संकलन भी उत्तम है । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ सरल, ज्ञानवर्धक, रुचिकर एवं प्रासंगिक हैं । पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ ।

कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा, पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, मुम्बई

पत्रिका का यह अंक अपने साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पडा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचना 'भारतीय संस्कृति की संवाहक - हिन्दी का एक लम्बा सफर', 'वैदिक साहित्य में मानव संसाधन प्रबन्धन का सूत्र' एवं 'विश्वगुरूत्व एवं रोजगार हेतु वर्तमान शिक्षा प्रणाली न्यायसंगत नहीं' बहुत ही आकर्षक है । पत्रिका में समाविष्ट सभी अत्यन्त रचनाएँ रूचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं । पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ ।

कार्यालय प्रधान महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) , लखनऊ

आपके कार्यालय की विभागीय हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 18 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है । एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं । 'भारतीय संस्कृति की संवाहक- हिन्दी एक लम्बा सफर' .'स्त्री', 'जिन्दगी की सीख', 'भारत माता की जय', 'सोशल मीडिया और भारतीय समाज' एवं 'लोग पत्थर के हुए हैं' आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं रूचिकर हैं । उत्तम संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मण्डल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 18 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई । इस पत्रिका में प्रकाशित सभी सचनाएं रूचिकर, भावमुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण_हैं । पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है । कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं । श्री नवल किशोर सेठी की 'वैदिक साहित्य में मानव संसाधन प्रबंधन के सूत्र', श्रीमती लक्ष्मी खूटेटा की 'भारत माँ की जय', श्री शंकर लाल सीमावत की 'वर्तमान में महात्मा गांधी के सामाजिक दर्शन की प्रासंगिकता', श्रीमती रीतिका मोहन की 'बचपना' रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं । पत्रिका को सूरूचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किये है । पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) , चंडीगढ़

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” के 18 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई । सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर सुश्री रश्मि राज, कनिष्ठ अनुवादक की रचना ‘स्त्री’, श्री सुनिल कुमार खूंटेटा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना ‘लोग पत्थर के हुए’, तथा श्री शंकर लाल सीमावत, कनिष्ठ अनुवादक का लेख ‘वर्तमान में महात्मा गांधी के सामाजिक दर्शन की प्रासंगिकता’, आदि उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है । पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) महाराष्ट्र, नागपुर

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका लेखापरीक्षा अर्चना के 18 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए सहर्ष धन्यवाद ।

पत्रिका का मुख पृष्ठ आकर्षक है । पत्रिका मे सम्मिलित समस्त रचनाएं स्तरीय एवं प्रशंसनीय हे । इस अंक में प्रकाशित ‘भारतीय संस्कृति की संवाहक - हिन्दी एक लम्बा सफर’ ‘स्त्री’, ‘हिफाजत’, ‘आत्म निर्भरता’, ‘मेरा श्राद्ध’, एवं ‘लोग पत्थर के हुए है’ रचनाएं विशेष रूप से ज्ञानवर्धक, सराहनीय एवं रोचक है । पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरन्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

क्षेत्रिय प्रशिक्षण संस्थान, प्रयाराज

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली हिन्दी पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” के 18 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई । एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका की साज - सज्जा बहुत अच्छी है । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सराहनीय एवं उच्च कोटि की है । विशेष रूप से ‘घर’, ‘स्त्री’, ‘भारत माता की जय’, ‘टूटी चप्पल’, ‘प्रतिशोध’, ‘लोग पत्थर के हुए’ है आदि रचनाएं रोचक, सारगर्भित एवं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), ओडिशा, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” के 18 वें अंक की प्राप्ति हुई । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं । पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका मे प्रकाशित छायाचित्र अत्यन्त आकर्षक और मनमोहक हैं । साथ ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यन्त आकर्षक है । कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली है । इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगी वो है- ‘हिफाजत’, ‘सक्रिय रहें’, ‘सोशल मीडिया और भारतीय समाज’, ‘लोग पत्थर के हुए हैं आदि ।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-।।), पश्चिम बंगाल

आपके कार्यालय के हिन्दी गृह पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” के 18 वें अंक की एक ई- प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित रचनाएं, लेख, कविताएं, प्रेरक प्रसंग इत्यादि उत्कृष्ट, पठनीय और सरल भाषा में हैं । विशेषतः रीतिका मोहन की ‘बचपना’, रश्मि राज की कविता ‘स्त्री’, लोकेन्द्र सिंह की ‘टूटी चप्पल’, रूचि गुप्ता की ‘प्रतिशोध’ आदि रचनाएं सराहनीय हैं ।

पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के प्रगतिशील उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है । पत्रिका में संकलित चित्र और इसकी साज - सज्जा भी आकर्षक है।

आशा है कि गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंक के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नई

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका “लेखापरीक्षा अर्चना” के 18 वें संस्करण की एक ई-प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए सहर्ष धन्यवाद ।

पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बडी ही खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, श्री यादराम सिहं यादव की रचना ‘भारतीय संस्कृति की संवाहक हिन्दी एक लम्बा सफर’, श्री नवल किशोर सेठी की रचना ‘वैदिक साहित्य में मानव संसाधन प्रबंधन के सूत्र’ सुश्री रश्मि रजा की रचना ‘घर’ श्री ओम प्रकाश गुप्ता की रचना ‘जिन्दगी की सीख’, श्री राजीव भाटिया की रचना ‘माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस’, श्रीमती लक्ष्मी खूंटेटा की रचना ‘भारत माता की जय’, श्री शंकर लाल सीमावत की रचना ‘वर्तमान में महात्मा गांधी के सामाजिक दर्शन की प्रासंगिकता’, श्री देव शर्मा की रचना ‘सक्रिय रहें’ श्री पदम चन्द गाँधी की रचना ‘विश्व गुरूत्व एवं रोजगार हेतु वर्तमान शिक्षा प्रणाली न्यायसंगत नहीं’, श्री दीपक कोहली की रचना ‘सोशल मीडिया और भारतीय समाज’, सुश्री लवली शर्मा की रचना ‘आत्मनिर्भरता’, श्री लोकेन्द्र सिंह की रचना ‘टूटी चप्पल’, सुश्री रूचि गुप्ता की रचना ‘प्रतिशोध’, श्री सुनील कुमार खूंटेटा की रचना ‘लोग पत्थर के हुए हैं’, आदि रचनाएं विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करती हैं । पत्रिका में हिन्दी भाषा संबंधी विचार बढ़िया एवं ज्ञानवर्धक है।

पत्रिका के माध्यम से “क” क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार हेतु आप सभी लेखकों का योगदान अत्यंत सराहनीय है । पत्रिका के मुख पृष्ठ पर अंकित जयपुर स्थित सिटी पार्क का चित्र और अंतिम पृष्ठ पर पार्क का चित्र बहुत सुन्दर हैं, जो पत्रिका को आकर्षक बनाते है । पत्रिका की साज- सज्जा बहुत उत्तम है । पत्रिका में कार्यालयीन झलकियां पत्रिका की सुन्दरता में वृदि करती है।

आपकी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहें, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट

लेखापरीक्षा शब्दावली

Abstract Sheet	सार पत्रक	Manipulation	हेर-फेर, जोड़-तोड़
Account For	लेखा-जोखा देना	Methodology	कार्यप्रणाली
Appraisal	मूल्यांकन	Proceedings	कार्यवाही
Brainn Drain	प्रतिभा पलायन	Propriety	औचित्य
Breach of Agreement	करार भंग	Random Sampling	यादृच्छिक प्रतिचयन
Casting Vote	निर्णायक मत	Recoument	प्रतिपूर्ति
Cease Fire	युद्ध विराम	Self-Contained Note	स्वत: पूर्ण टिप्पणी
Certified Copy	प्रमाणित प्रति	Prior Approval	पूर्व अनुमोदन
Defalcation	गबन	Standard Deduction	मानक कटौती
Deficit Budget	घाटे का बजट	Substantive Pay	मूल पद वेतन
Despatch Register	प्रेषण पंजिका	Working Knowledge	कार्यसाधक ज्ञान
Discretionary Power	विवेकानुदान	Vote of Account	लेखानुदान
Lexicon	शब्दकोश	Questionnaire	प्रश्नावली
Litigation	मुकदमेबाजी	Stagnation	ठहराव, गतिरोध
हमें संकल्प लेना होगा कि हम सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने में अपना गौरव समझेंगे और हिंदी का प्रयोग न केवल निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए करेंगे बल्कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करने के लिए भरसक प्रयास करते रहेंगे।			

हम भारत के वरिष्ठ नौजवान

हमने देखे हैं सत्तर से निन्यानवें बसन्त ।
सदा पाई अच्छाई, बुराई का किया सदा अन्त ।।
हमारा लोहा मानते हैं चीन और जापान ।
विश्व शक्ति में आगे रहते हम भारत के वरिष्ठ नौजवान ।।
हमने ही बनाई रामायण, वेद, पुराण और गीता ।
नारी शक्ति में आगे रही सदा ही सीता ।।
बिना पासपोर्ट के लंका में जा पहुचें हनुमान ।
रावण का घमण्ड तोड़ते हम, भारत के वरिष्ठ नौजवान ।।
वक्त आने पर नेताजी, किसान, मजदूर हम बन जाते ।
बार-बार में आजाद हिन्द के नारे खुब लगाते ।।
विश्व के नए-नए संगठन बनाते सीना तान ।
सामाजिक, राजनैतिक संगठन बनाते हम भारत के वरिष्ठ नौजवान ।।
देश की सरकार चलाने में जब आती हमारी बारी ।
लोकतंत्र में चुनाव लड़ने की करते हम तैयारी ।।
तलाश करते हैं हम देश में हीरो की खान ।
मेहनत में पीछे नहीं रहते, हम भारत के वरिष्ठ नौजवान ।।
देश को आगे बढ़ाते अपना अनुभव बतलाते ।
बच्चों और युवाओं को शिक्षा की बातें खूब बताते ।।
राष्ट्र एकता बनाते, साम्प्रदायिकता मिटाते, देते सबको ज्ञान ।
देश को अखण्ड भारत बनाते, हम भारत के वरिष्ठ नौजवान ।।
कभी हम थे सचिव और महालेखाकार ।
हम हैं सब बड़े काम के नहीं हैं बेकार ।।
कर्मचारियों समुह 'क' से 'घ' थी हमारी पहचान ।
नई-नई सरकार बनाते, हम भारत के वरिष्ठ नौजवान ।।
देश पर नहीं आने देते कभी भी संकट ।
देश प्रेम में ही हमारे अच्छे दिन रहे है कट ।।
वरिष्ठ नागरिक कह कर लोग देते हैं हमें सम्मान ।
युवाओं से भी आगे रहते, हम भारत के वरिष्ठ नौजवान ।।
बोलते हैं 18 भाषा और 36 बोली ।
स वसुधेव कुटूम्बकम का संदेश देते हम, कहता मदन लाल कोली ।।
कश्मीर से कन्याकुमारी, अरूणाचल प्रदेश से राजस्थान ।
तिरंगा पहनाते हम भारत के वरिष्ठ नौजवान ।।

मदन लाल कोली
(से.नि.) लेखापरीक्षा अधिकारी

महालेखाकार कार्यालय परिसर में स्थित चारों कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित गणतंत्र दिवस-2023 के दृश्य

महालेखाकार कार्यालय
A.G.OFFICE